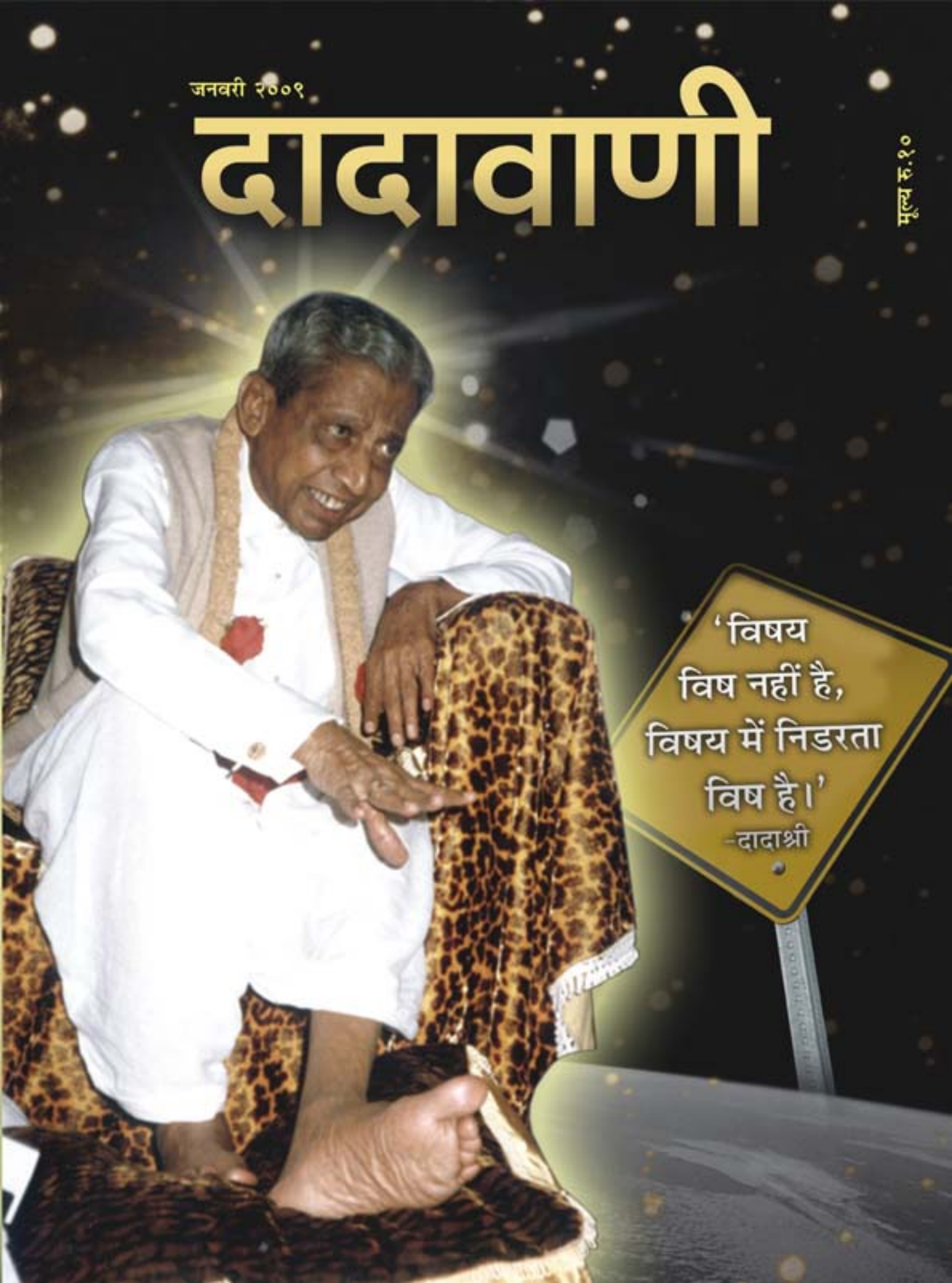
जनवरी २००९

दादावाणी

मूल्य रु.१०



तंत्री तथा संपादक :
दीपक देसाई
वर्ष: ४, अंक : ३
अखंड क्रमांक : ३९
जनवरी २००९

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदिर, सीमंधर सीटी,
अहमदावाद-कलोल हाइ वे,
पो.ओ.: **अडालज**,
जि.: गांधीनगर-३८२४२१
फोन : (०७९)३९८३०१००
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
अहमदाबाद : (079) 27540408
वडोदरा : (0265) 2414142
मुंबई : 9323528901-03
राजकोट त्रिमंदिर :
9924343478, 9274111393
U.S.A. : 785-271-0869
U.K.: 07956476253
Website : www.dadashri.org
www.dadabhagwan.org

Publisher, Owner & Printed by :
Deepak Desai on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printer/Press :
Mahavideh Foundation
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

सबस्क्रिप्शन (सदस्यता शुल्क)
१५ साल का
भारत : ८०० रुपये
यु.एस.ए. : **१५० डॉलर**
यु.के. : **१०० पाउन्ड**
वार्षिक
भारत : १०० रुपये
यु.एस.ए. : **१५ डॉलर**
यु.के. : **१० पाउन्ड**
भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के
नाम से भेजे।

दादावाणी

परिणीतों को भी सिद्ध हो सके ब्रह्मचर्य

संपादकीय

रास्ते में जैसे ही हॉटेल देखा कि तुरंत चाय पी ली, आज ऐसा विषय-विकार व्याप्त हो चला है। वर्तमान काल की यह बड़ी विचित्रता है। आज लोगों को विषय के परिणाम और जोख़िम संबंधी कोई जागरूकता ही नहीं रही है। हालाँकि शादी की परंपरा के कारण विषय पर मर्यादा आ जाती है। यदि हक़ के विषय में नियम से रहा जाए तो भी मनुष्य फिर से मनुष्य जन्म प्राप्त करेगा। अन्यथा, हक़ के विषय में अनियम उसे अधोगति में ले जाएगा और बिना हक़ का विषय तो अधोगति के उपरांत अनेकों अवतार खराब कर सकता है।

ऐसे इस काल में ब्रह्मचर्य का पालन करना दुष्कर कहलाए फिर भी ऐसे काल में प्रकट ज्ञानीपुरुष परम पूज्य दादा भगवान ने खुद ब्रह्मचर्य चरितार्थ किया और हजारों को ब्रह्मचर्य चरितार्थ करने के गुर समझाए हैं। परिणीतों को ब्रह्मचर्य के सोपान समझाते हुए दादाश्री ने बताया कि बाहरी परिवर्तन लाना वह परिणाम है, उसके बजाय, अंदरूनी तौर पर समझदारी के परिवर्तन से बाहर आहिस्ता-आहिस्ता बदलाव लाया जा सकता है। वर्तमान समय में एक पत्नीव्रत या एक पतिव्रत वह ब्रह्मचर्य कहलाए, ऐसा दादाश्री भगवान की ओर से गारन्टी के साथ कहते हैं। तब फिर जो परिणीत है, वे दादाश्री की दृष्टि को समझकर ब्रह्मचर्य के मार्ग पर अग्रसर होते हुए अपना लक्ष्य ज़्यों सिद्ध नहीं कर सकते?

विवाहित जीवन का तात्पर्य यही है कि शादी करने में सुख है या नहीं? इसका निष्कर्ष निकालते हुए, अध्यात्म उन्नति की ओर अग्रसर होना है। सांसारिक अनुभवों के आधार पर एक-एक सोपान सर करते हुए अनुभव की कक्षा में आगे बढ़ने के लिए संसार है। विवाहितों ने केवल विषय-विकार को ही सुख मान लिया है, वहाँ ज्ञानीपुरुष लालबज़ी धरते हैं (भय-सिग्नल दिखाते हैं)। श्रीमद् राजचंद्रजी भी अपने अनुभव कथनों द्वारा समझाते हैं कि 'विषय मोह में स्त्री का दोष नहीं है, व्यवहार आत्मा का ही दोष है। उस विषय दोष का क्षय होने पर जो आत्मदर्शन प्राप्त होता है वह अद्‌भूत और आनंदमय ही है। इसलिए विषय दोष से मुज़्त होना यही परम जिज्ञासा है।'

प्रस्तुत संकलन में दादाश्री, आत्मार्थी के लिए ब्रह्मचर्य का महत्व समझाते हैं और विषय में स्त्री-पुरुष को ज़्या जोख़िम है, मोक्ष हेतु ज़्या हिताहित है, इसके सारे गुर समझाते हैं। ब्रह्मचर्य में किस प्रकार आगे बढ़ पाएँ, आगे बढ़ते हुए ब्रह्मचर्यव्रत तक कैसे पहुँचा जाए और उसका पालन करते हुए आत्मा का स्पष्ट अनुभव कैसे पाया जाए, इसके सारे रहस्य यहाँ संकलित हुए हैं, जो पुरुषार्थीओं के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होंगे।

दीपक देसाई ....

पाठकों से...

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शज़्द या तो अंग्रेजी शज़्द का अर्थ है अथवा शज़्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाज़्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शज़्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदुभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधार कर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

परिणीतों को भी सिद्ध हो सके ब्रह्मचर्य

अनुभव से निकालिये 'सुख' का सार

प्रश्नकर्ता : हमारे हिन्दु समाज में जो शादियाँ होती हैं, वे माता-पिता के द्वारा तय हुई होती हैं जो बाद में विफल जाती हैं और लोगों को सारी ज़िन्दगी सहन करना पड़ता है। इसके लिए ज़्या कोई ऐसा रास्ता है कि ऐसा नहीं हो?

दादाश्री : वह तो अपनी चोइस (पसंद) के अनुसार ज़्याहे तो भी ऐसा ही होगा और माता-पिता की चोइस के अनुसार ज़्याहे तब भी वैसा ही होगा। ज़्योंकि शादी का नाम ही तोड़-जोड़। उसका नाम ही तोड़-जोड़ है। बिना तोड़-जोड़ हुए रहनेवाला ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, हमने सुंदर डिझाइन (सुंदर आकृति सोच रखी हो) बनाया हो, मगर वे तरबूज़ा उठा लाए हों।

दादाश्री : तरबूज़ा लाकर फिर काटें तब अंदर से सफेद निकले या फिर लाल निकले (पात्र अच्छा भी निकले या बुरा भी निकले)। ज़्योंकि शादी मतलब अपने आप में तोड़-जोड़ ही है। मगर शादी हितकारी कैसे है? अनिवार्य ज़्यों है? ज़्योंकि वह मनुष्य को टकरा-टकराकर डिवेलॅप (विकसित) करती है। जीव मात्र को डिवेलॅप्ड करने का साधन है शादी। टकरा-टकराकर अनुभव लेकर, एज़्सपिरिअन्स करके, आगे बढ़ते हैं।

प्रश्नकर्ता : मतलब मोक्ष में जाने के लिए यह भी एक सीढ़ी है!

दादाश्री : यही सीढ़ी है। स्त्री, यही सीढ़ी और स्त्री के लिए पुरुष, यही सीढ़ी। मारे, ठोके, झकझोरे, सब करने पर ही मोक्ष में जाएँ। इसपर से सार निकाले कि ज़्याहने जैसा नहीं है और फिर ऐसा बोले भी। चाहे कैसी भी मोहमयी पत्नी रही पर फिर भी ऐसा तय करे कि, 'ज़्याहने जैसा नहीं है, भाड़ में जाए यह संसार।' इसलिए कहता हूँ, ज़्याहने के बाद सार निकालना। सार निकालने में तोड़-जोड़ है ही फिर। किंतु लोग सार निकालना नहीं जानते हैं। इसलिए वे ज़्या करें? वे ज़्लेम (दोषारोपण) ही किया करें, उससे कर्म बँधते हैं और फिर अनंत जनम जानवर (गति) में घूमा करे। यदि सार निकालना आया तो समझ जाए कि यह सही है। ज़्या अनुभव हुआ उसे देखना। शादी भोग-विलास हेतु नहीं है, अनुभव के लिए है। हमने सारा अनुभव ले लिया है।

लड़कियाँ पूछती हैं कि 'हम ज़्याहें या नहीं ज़्याहें?' मैं कहता हूँ, 'देखिये, ज़्याहे बगैर चले ऐसा नहीं है और ज़्याहने के बाद पछताए बगैर भी चले ऐसा नहीं है, ज़्योंकि सबकुछ ज्ञान प्रदान करनेवाला है। और यदि चला सके ऐसा हो, यदि तू पहले का इसका अनुभव लेकर आई है और आज (बिना ज़्हाहे) चला सके ऐसा हो, तो चला ले। बाकी, ज़्याहना यह कोई गुनाह है ऐसा नहीं है।' वह ज्ञान प्रदान करनेवाली बात है। तुझे ज्ञान नहीं मिला ज़्या?

प्रश्नकर्ता : बहुत मिला, दादाजी।

दादाश्री : हाँ, और यदि बिन ज़्याहे ही जगत कल्याण में लग गए होते तो मन में थोड़ा-थोड़ा खले

कि ज़्याहे होते तो अच्छा होता। सारी ज़िन्दगी अखरता रहे, अब यह अखरेगा ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, मैंने यदि शादी नहीं की होती, तो मुझे यह जगत आदि सब ज़्या है इसकी कोई समझदारी ही नहीं आई होती।

दादाश्री : घर के सभी कहा करते थे कि 'यह शादी नहीं करती, शादी नहीं करती।' मुझे इस पर विचार आया कि बेचारी शादी ज़्यों नहीं करती है? मैंने उसे समझाया कि, 'बहन, शादी करने जैसा है जगत में। ज़्याहकर पछताना तो पड़ेगा, मगर इस जगत में ज़्याहने जैसा है ही।' फिर मैं सोचने लगा कि, 'मैंने ऐसी बात ज़्यों कही थी?' लेकिन आज मुझे पता चला कि यह तो लाभकारी हुआ, वर्ना खटकता रहता कि 'ज़्याहे होते तो अच्छा होता।' किंतु अब ज़्लीयर कट (स्पष्ट हो गया) है। कोई यदि पूछें कि, 'ज़्याहेगी ज़्या?' तो कहेगी, 'नहीं। अब ज्ञान ले लिया है।' शादी करने में हर्ज है या नहीं यह देख लिया, अनुभव ले लिया न! वर्ना मन में खटकता रहे। आप सभी को अनुभव हुए हैं न!

प्रश्नकर्ता : हुए हैं, दादाजी।

दादाश्री : इसे ऐसा विचार आता था कि हम ब्राह्मण के साथ शादी करेंगे तो मुसीबत होगी, इसलिए अब जैन के साथ शादी की, मगर उसमें भी पता चल गया न? वह भी अनुभव ले लिया कि नहीं? उसमें भी अनुभव तो मिलता ही है न!

प्रश्नकर्ता : अब तो शादी नहीं करने का निश्चय ही कर लिया।

दादाश्री : हमने भी हीराबा के साथ सारा अनुभव ले लिया। फिर सार निकाला कि 'अब अनुभव ले लिया।' मगर यदि टोक-टोक करेंगे तो फिर से थोड़े बखेड़े होते रहेंगे, उसके बजाय हिसाब चोखा कर लीजिए मतलब हो गया ज़्लीयर कट। बस इतना ही। उनके प्रति दुर्भाव नहीं होने दिया कभी। वे उलटा करें, तब भी भाव नहीं बिगड़ता। हम अपना ज़्यों बिगाड़े? एक जनम के लिए पाला पड़ा है तो वह पूरा करना! जब तक पूरा नहीं होता तब तक। अँगारा कहाँ तक थामे रहना? जब तक पकड़ने की शक्ति हो, थामे रहना। और यदि जलने लगा तो? सबकी सीमा होती है न, कि नहीं होती?

प्रश्नकर्ता : बराबर।

दादाश्री : शादी करके पछताना, लेकिन पछताने पर ज्ञान होता है। अनुभवज्ञान होना चाहिए न? यों ही किताब पढ़ने से अनुभवज्ञान होता है ज़्या? किताब पढ़ने से वैराग्य आता है कभी? वैराग्य तो पछतावा होने पर ही आता है।

जब से शादी होती है तब से मेरीड लाइफ (विवाहित जीवन) का गलन होता है, यानी फिर, एक दिन सबकुछ समाप्त हो जाए (मृत्यु आने पर या डिवोर्स लेने पर)।

माना सुख, पर है अंत में दुःख

स्त्री-पुरुष के ये जो विषय हैं, उसमें दावे दायर होते हैं, ज़्योंकि इस विषय में दोनों का साथ में मालिकानापन है। और मत दोनों के अलग हैं। इसलिए यदि स्वतंत्र होना चाहते हैं तो इस गुनहगारी में नहीं आना चाहिए और जिनको यह गुनहगारी अनिवार्य है उन्हें उसका निपटारा करना पड़े।

प्रश्नकर्ता : गुनहगारी में नहीं आना पड़े उसके लिए शादी नहीं करनी चाहिए न?

दादाश्री : शादी करना या नहीं करना, यह हमारी सज़ा की बात नहीं है। तुझे निश्चयभाव रखना चाहिए कि ऐसा नहीं हो तो उज़म। जैसे, ट्रेन में से नीचे गिरने की किसी की इच्छा होती है ज़्या? हमारी ज़्या इच्छा होती है कि गिर नहीं पड़ें तो अच्छा, फिर भी यदि गिर पड़ें तो ज़्या करना? वैसे ही शादी के लिए गिर नहीं पड़ें तो अच्छा, ऐसे भाव हमें रहने चाहिए।

प्रश्नकर्ता : मतलब, शादी करना यह ट्रेन में से गिर पड़ने के बराबर है ज़्या?

दादाश्री : वैसा ही है न, मगर वह अनिवार्य रूप से ही होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : फिर उसे नाटक के रूप में लेना पड़े?

दादाश्री : अवश्य, फिर कोई चारा ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : शादी में इतना बड़ा जोख़िम है ज़्या? वह सुख दाद के समान है, तब फिर ये सभी शादी करते हैं तो ज़्या वे अनिवार्य रूप से ज़्याहे हैं? ज़्यों ज़्याहते हैं?

दादाश्री : लोग तो खुशी-खुशी, शौक से ज़्याहते हैं। इसमें दु:ख है ऐसा जानते ही नहीं। वे तो ऐसा ही जानते हैं कि कुल मिलाकर इसमें सुख है। थोड़ा-बहुत घाटा होगा मगर कुल मिलाकर मुनाफ़ेवाला आइटम है, ऐसी लोगों की मान्यता है। जब कि हक़ीक़त में नरदम घाटा ही है। वह तो जब 'इन्कमटैज़्स' के ऑफिस में जाए (यानी, यदि ज्ञानीपुरुष मिल जाए तो) तब पता चले कि यह सारा घाटा ही था। और वह भी हमारे हाथ में सज़ा नहीं है न? इस भव में हमारे हाथ में नहीं है न? इस भव में तो अब नये सिरे से हमारा 'डिसिझन' (निर्णय) आ जाए ताकि शुद्धि हो जाए।

श्रीमद् राजचंद्रजी ने इसलिए तो कहा है कि, ''देखत भुलावा टले' तो सर्व दु:खों का क्षय होता है।'' और हमारा (दादाश्री का) ज्ञान तो ऐसा है कि देखें और भूल नहीं हो। ज़्योंकि देखा मतलब, वह 'शुद्धात्मा' के रूप में दिखाई देना चाहिए, और 'शुद्धात्मा' देखने के बाद फिर राग नहीं होता।

कृपालुदेव की विचारक दृष्टि में...

कृपालुदेव के पत्र में ज़्या लिखा है? 'स्त्री के संबंध में मेरे विचार।'

'अति-अति स्वस्थ विचारणा से ऐसा सिद्ध हुआ है कि शुद्ध ज्ञान के आश्रय में निराबाध सुख रहा है तथा वहाँ ही परम समाधि रही है। स्त्री, वह संसार का सर्वोज़्म सुख है ऐसा केवल आवरणिक दृष्टि से कल्पना में आया है। मगर, वह ऐसा है ही नहीं। स्त्री द्वारा जो संयोग सुख भोगने का चिह्न है उसे विवेकपूर्ण दृष्टि से देखने पर वह वमन करने योग्य भूमिका के योग्य भी नहीं रहता है।'

कृपालुदेव कहते हैं कि वह स्थान वमन करने योग्य भी नहीं है। इसलिए अन्य किसी अच्छी जगह में उलटी करना। फिर आगे ज़्या कहते हैं?

'जिन-जिन पदार्थों के लिए जुगुप्सा रही है वे सारे पदार्थ तो उसके शरीर में रहे हैं और उनकी वह जन्मभूमिका है।'

जन्मभूमिका किसलिए कहा, कि यह जन्मभूमिका ऐसे सारे कूड़ों को ही जन्म देती है!

प्रश्नकर्ता : जुगुप्सा माने ज़्या?

दादाश्री : जुगुप्सा माने चिढ़। जिनके लिए चिढ़ है वे सारी चीज़ें उसमें ही है न! रेशमी चद्दर में लिपटा मतलब ज़्या सब अच्छा हो गया? कृपालुदेव ने तो बहुत लिखा है, मगर लोग ज़्या समझें बेचारे?

'फिर वह सुख क्षणिक, खेदजनक और खुजली के दर्द के समान ही है। उस समय का दृश्य हृदय में चित्रित होकर हँसाता है कि यह कैसा भुलावा? संक्षिप्त में कहा जाए तो उसमें कोई भी सुख नहीं है और सुख हो तो उसे अपरिच्छेद के रूप में वर्णन करके देखिये।'

मतलब, कृपालुदेव ऐसा कहना चाहते हैं कि, 'इस विषय का विशेष विवरण करके तलाश कीजिए।' उसकी सुगंध देखना चाहें तो उस जगह को सूँघकर देखिये कि आपको कैसा लगता है? दिन के उजाले में उस जगह को देखने पर ज़्या वह जगह खूबसूरत लगेगी? हर तरह से उस पर चिढ़ होगी।

'यानी केवल मोहदशा को लेकर सुख की

मान्यता हुई है, ऐसा प्रतित होगा। यहाँ मैं स्त्री के अवयवादि भाग का विवेक करने नहीं बैठा हूँ। लेकिन वहाँ फिर से व्यवहार आत्मा खींचे ही नहीं इस विवेक के हेतु सहज सूचन किया है। स्त्री में दोष नहीं है, मगर व्यवहार आत्मा में दोष है, और उस दोष के जाने पर आत्मा जो देखता है वह अद्‌भूत आनंदमय ही है, इसलिए उस दोष से रहित होना यही परम जिज्ञासा है।'

स्त्री का दोष नहीं है, हमारी भूल का दोष है, हमारी समझदारी में खोट है। स्त्री का ज़्या दोष? यदि स्त्री में दोष होता तो फिर ये भैंसे भी स्त्रियाँ (स्त्री जाति) ही हैं न? लोग वहाँ ज़्यों नहीं खिंचते? हमारी समझ उलटी है इसलिए खिंचते हैं। वह उलटी समझ निकाल दें तो सब निकल जाए और आज नहीं तो कल, किसी समय भी यह उलटी समझ निकाले बगैर छुटकारा ही नहीं है। यह गंदगी है, इतनी तो गंदगी है कि इसके लिए मेरी चिढ़ जाती ही नहीं है।

राजा को जीता मतलब जीता सारा राज्य

कृपालुदेव ने कहा है,

'निरखकर नवयौवना लेश न विषय निदान,
गिने (माने)काष्ठ की पूतली, वह भगवान समान।'
– श्रीमद् राजचंद्रजी

हमारे अक्रम मार्ग में स्त्री को काष्ठ की पूतली नहीं मानना है। हमें आत्मा देखना है। यह तो क्रमिक मार्गवाले काष्ठ की पूतली कहें, मगर ऐसी व्यवस्था कब तक बनी रहे? ज़रा फिर से विचार आया कि उस समय सब उड़ जाए। मगर यदि हम 'शुद्धात्मा' देखें तो? यानी, नवयौवना को देखकर उसके प्रति चिज़ पकड़ा गया तो वहाँ पर शुद्धात्मा देखा करें ताकि सब चला जाए, फिर चिज़ छूट जाए। विषय जीतने के लिए शुद्धात्मा देखने पर हल निकलेगा, वर्ना इस समस्या का हल नहीं है।

'इस सकल संसार की, रमणी नायक रूप,
उसे त्यागा तो त्यागा सभी, केवल शोक स्वरूप।'
– श्रीमद् राजचंद्रजी

सारा शोक ही उसके कारण खड़ा हुआ है। स्त्री का त्याग हुआ, उससे अलग हुए कि सारी समस्या हल हो गई। जो सारा निरंतर शोक का ही स्वरूप है। सारा दिन शोक, शोक और शोक ही होता है। शोक ही मिलता हो, फिर वह सब चला जाए। वर्ना, जो आ चिपका, वह फिर अलग ही नहीं होता न?

'एक विषय को जीतते, जीता सब संसार,
नृपति को जीतते, जीतिये दल, पुर और अधिकार।'
– श्रीमद् राजचंद्रजी

सिर्फ राजा को जीत लिया यानी दल, पुर और अधिकार सब हमारा हो गया। उसका लश्कर भी हमारा हो जाए। लश्कर को जीतने जाएँ तो राजा को नहीं जीत पाते। वैसे यह विषयरूपी राजा को जीत लिया कि सबकुछ हमारे कज़्ज़े में आ जाए। इसलिए हम (दादाश्री) मुज़्त रहते हैं न! यह एक विषय ही ऐसा है जिसे जीतने पर सारा राजपाट हमारे हाथों में आ जाए। हमें विषय का विचार तक नहीं आता है।

टले ज्ञान और ध्यान...

'विषयरूप अंकुर से टले ज्ञान और ध्यान,
लेश मदिरापान से छके ज्यों अज्ञान।'
– श्रीमद् राजचंद्रजी

यदि एक ही, बिना हक़ का विषय भोग किया, तो सब बिगड़ जाए। फिर से अनंत जनमों का घाटा हो और नर्कगति का अधिकारी हो जाए। कौन-सा विषय नर्कगति नहीं करवाता? जो लोकमान्य होता है। जब कोई शादीशुदा मनुष्य अपनी पत्नी को लेकर जा रहा हो तो लोग उसका विरोध करेंगे ज़्या?

प्रश्नकर्ता : नहीं करेंगे।

दादाश्री : और यदि शादीशुदा नहीं हो और वह किसी स्त्री को ले जा रहा हो तो?

प्रश्नकर्ता : तो विरोध उठाएँगे।

दादाश्री : वह लोकमान्य नहीं कहलाए। वह नर्कगति का अधिकारी होता है। दोनों को नर्क में

जाना पड़े। दोनों को नर्क में साथ-साथ रहना पड़े फिर।

प्रश्नकर्ता : 'विषयरूप अंकुर से....' मानें?

दादाश्री : अंदर बीज होता है और उस बीज के अनुरूप जो विचार आया और उसमें तन्मयाकार होना, वह अंकुर कहलाए। वह अंकुर बाहर आया, कि गया..., इसलिए हम तय करते हैं न कि विचार आने से पहले अंकुर को खींचकर बाहर फेंक देना। वह अंकुर फूटा कि फिर ज्ञान और ध्यान आदि सब टूट जाएँ, खतम हो जाएँ।

प्रश्नकर्ता : इस अक्रम विज्ञान में भी ऐसा ही होता है ज़्या?

दादाश्री : ज्ञान और ध्यान टल जाएँ। विचार आने पर सिर्फ ज्ञान और ध्यान ही नहीं, किंतु आत्मा (आत्मजागृति) ही चला जाए। क्रमिक में तो ज्ञान, ध्यान चले जाएँ और अक्रम में तो, आत्मजागृति जो दी है, वह चली जाए। मतलब, अुंकर तक नहीं पहुँचना चाहिए।

ब्रह्मचर्य सेवन से पात्रता

आगे कृपालुदेव कहते हैं कि,

'बिना पात्र वस्तु न रहे, पात्र से आत्मिक ज्ञान,
पात्र होने सेवन सदा, ब्रह्मचर्य मतिमान।'

ब्रह्मचर्य के सेवन से पात्रता प्राप्त होती है, ऐसा कृपालुदेव कहते हैं। उन्होंने ऐसा नहीं कहा है कि आम नहीं खाना। मूल ही पकड़ा है सारा। यदि सामनेवाला अजीव होता तो दावा दायर नहीं करता, तो हम ब्रह्मचर्य का सेवन नहीं करते। लेकिन यह तो दावा दायर करे।

'जो नौ बाड़ विशुद्धि से धरे शील सुखदायी।'
- श्रीमद् राजचंद्रजी

प्रश्नकर्ता : नौ बाड़ विशुद्ध ब्रह्मचर्य की व्याज़्या ज़्या है?

दादाश्री : नौ बाड़ मतलब मन-वचन-काया से ब्रह्मचर्य पालना। मन से जो सोचते हैं, ऐसा सोचना-करना नहीं। पिछले विषय-प्रसंग याद आने पर उस समय वह सब भूला देना। वाणी से बोलना नहीं, देह से बहुत दूर रहना।

नौ बाड़ बतलाई है, कि जहाँ स्त्री बैठी हो वहाँ हमें नहीं बैठना है, उसे देखना नहीं। कोई विषय भोग करता हो तो उसे चूपके से दरार में से देखना नहीं। देखने पर भी हमारा मन बिगड़ जाए। हमने पीछे जो संसार भुगता हो उसको याद नहीं करना। याद करने पर फिर विचार आने लगे, ऐसी सब नौ बाड़ें हैं।

स्त्री बैठी हो वहाँ मत बैठना, ऐसा कहें। फिर उस जगह के लिए ज़्या होगा? राग होगा या द्वेष होगा? द्वेष होता रहे। उलटे राग-द्वेष के कारखाने बढाएँ। इसलिए नौ बाड़ का हम ज़्या करें? उसके बजाय एक बाड़ कर डालो तो बहुत हो गया। नौ बाड़ करने में फिर दूसरे राग-द्वेष खड़े होंगे। उसके बजाय स्थूल ब्रह्मचर्य का पालन कीजिए और मन में जो विचार आए उसका प्रतिक्रमण करके धो डालिये। नौ बाड़ का पालन तो आज कोई भी नहीं कर सकता, एक-दो बाड़ भी टूट गई होती हैं तो आप कैसे नौ बाड़ पूरी कर सकेंगे? आपको तो हमने जो दिखलाया है उसमें रहना है। हमारा (अक्रम रीति के अनुसार) करने पर उसमें नौ बाड़ आदि सब आ जाता है। नौ बाड़ का पालन करने में अहंकार की ज़रूरत होती है। लेकिन हमारा अक्रम मार्ग तो (बाह्य क्रिया) करने का मार्ग ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर प्रतिक्रमण करते समय हम विषय प्रसंगों को याद करते हैं उसका नया बंध तो नहीं पड़ता न?

दादाश्री : हाँ, याद आए, मगर प्रतिक्रमण मतलब हम विषय को उड़ा देना चाहते हैं, इस हेतु याद करते हैं। और दूसरे तो लालच हेतु याद करते हैं। दोनों के भाव में अंतर है। लोग याद करते हैं वह तो लालच से याद आती है और यह तो प्रतिक्रमण हेतु याद आती है। प्रतिक्रमण करने के

पीछे छोड़ने का भाव है, जब कि लोगों को लालच का भाव होता है। यानी दोनों के भाव में अंतर है।

'भव उसका लव रहे फिर, तज़्व वचन वह भाई।'
– श्रीमद् राजचंद्रजी

'लव' मतलब अल्प मात्र, यानी फिर भव कम हो जाएँ, भव थोड़े रह जाएँ। ऐसा तज़्व वचन है। तज़्व का सार है।

'सुंदर शील सुरतरु, मन-वाणी अरु देह,
जो नर-नारी सेवन करे, अनुपम फल वे लेय।'
– श्रीमद् राजचंद्रजी

शील मतलब शीलवान। मन-वचन-काया से शीलवान रहे, वे अनुपम फल ले।

प्रश्नकर्ता : शीलवान कौन कहलाए?

दादाश्री : जिसे विषय का विचार नहीं आए। जिसे क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं होते, उसे शीलवान कहते हैं। केवल यह स्त्री विषय ही नहीं, किंतु क्रोध-मान-माया-लोभ भी खुद को वश हुए होते हैं, इसलिए वह शीलवान कहलाए। जो क्रोध-मान-माया-लोभ खुद को दुःख दें, दूसरों को दुःख नहीं दें, वे 'कंट्रोलेबल' (नियंत्रणीय) कहलाए। भगवान ने उसे शील कहा।

प्रश्नकर्ता : यानी मन-वचन-काया से किसी भी जीव को किंचित् मात्र भी दुःख नहीं पहुँचाना यह जो भाव है, वह शीलवान?

दादाश्री : वह भाव तो है ही। वह तो अहिंसक भाव कहलाए। वह अलग वस्तु है और यह तो स्त्री संबंधी विषय जीता, उसने सब जीता।

प्रश्नकर्ता : मैंने ब्रह्मचर्य व्रत लेने के बाद एक महीने तक कृपालुदेव का यह पद 'निरखकर नवयौवना' गाया था।

दादाश्री : यह पद जो गाए उसकी शुद्धि हो जाए। यह पद तो आपको रोज़ गाना चाहिए, दो-दो बार गाना चाहिए। एक विषय को जीते तो सारा जगत जीत गया, बस। फिर चाहे कुछ भी खाए-पीए उसमें हर्ज नहीं है। मगर यह जिसने जीता वह सारा जगत जीत गया। मनुष्य यहाँ पर ही फँसता है। विषय को जीत लिया यानी दुनिया का राजा! कर्म ही नहीं बँधते न! विषय से तो निरे कर्म, भयंकर कर्म बँधते हैं। एकबार का विषय ही कितने जीवों को खतम कर देता है। उन सारे जीवों से ऋणानुबंध बँधता है। मतलब, केवल विषय जीत लिया तो बहुत हो गया।

संसार परिभ्रमण का मूल कारण

यह विषय ही एक ऐसी वस्तु है जो दुनिया में बंधनकारक होने का कारण है। उससे जगत खड़ा हुआ है। सारा जगत इसमें से ही उत्पन्न हुआ है और उसमें से सबकुछ खड़ा हुआ है। इसलिए इसको लेकर अभिप्राय ऐसे बदल देना चाहिए कि दूसरा अभिप्राय ही नहीं रहे। प्रतिदिन सामायिक करके, प्रतिक्रमण करके अभिप्राय बदलना चाहिए (कि विषय में सुख नहीं है)।

प्रश्नकर्ता : मनुष्य को प्रतिक्रमण करके भी अभिप्राय बदल देना चाहिए?

दादाश्री : हाँ। यहाँ आठ सौ पृष्ठों का ब्रह्मचर्य का पुस्तक लिखा गया है, वह आपने पढ़ा ज़्या? इसे 'वन्डर ऑफ द वर्ल्ड' (दुनिया का अजूबा) कहते हैं। यदि ब्रह्मचर्य रखना हो तो साधन ही दिया है। अन्य कोई साधन नहीं है। हमारे हिन्दुस्तान में ब्रह्मचर्य विषय को लेकर ऐसी कोई पुस्तक ही छपी नहीं है। कौन छापे? जो ब्रह्मचर्यवाले थे उनको फुरसत नहीं थी और जिन्हें फुरसत थी वे ब्रह्मचर्य में थे ही नहीं। सिर्फ दिखावे का ब्रह्मचर्य था। उनमें से कुछ तो खेतों में फिरनेवाले ब्रह्मचारी जैसे होते हैं। खेतों में ब्रह्मचारी देखें हैं आपने? खेत में काम करनेवाले बैल भी ब्रह्मचारी ही हैं न? स्त्री की सूरत ही नहीं देखे, ऐसा करते हैं न सब? अरे, स्त्रियों की कोख से तो तीर्थंकर जन्म लेते हैं, जिन स्त्रियों की कोख से ज्ञानीपुरुष पैदा होते हैं, जिन स्त्रियों की

कोख से सारे पुरुष पैदा हुए हैं, तूने उन स्त्रियों को ही देखना बंद कर दिया?

स्त्रियों का ज़्या दोष है? तेरी नीयत में ही खोट है, उसमें स्त्री ज़्या करे? मनुष्य को अपनी भूल देखने की आदत नहीं है। यदि हमें ऐसा कोई दृष्टि रोग हो तो हम स्त्री को नहीं देखें। मगर सारा मार्ग ही ऐसा तो नहीं प्रसारना चाहिए न?

बड़ी उम्र में ज़्याहने पर...

पहले के समय में स्त्री और पुरुष ने संसार भ्रष्ट नहीं किया था। लड़की चौदह साल की उम्र में शादी करे और लड़का सोलह साल का होने पर शादी करे। ताकि थोड़ा-बहुत लीकेज हुआ हो (शादी से पहले चिज़ थोड़ा-सा ही बिगड़ा हो)। खास कुछ लीकेज नहीं होता। और अभी तो, सभी लीकेज हुए होते हैं। बड़ी उम्र में शादी करने पर ज़्या हुआ होता है? पूरा लीकेज ही हो गया होता है (पूरा चिज़ बिगड़ गया होता है)। समझ में आए ऐसी बात है ज़्या? 'हमारी बात सही है' ऐसा हम कभी नहीं कहते, ज़्योंकि वह गलत भी निकले, 'हमारी बात सही है' ऐसा हमारी दृष्टि में है। मोक्षमार्ग के लिए हमारी बात शत-प्रतिशत सही है, ऐसा कहेंगे। मगर व्यवहार में तो गलत भी निकले। ज़्योंकि यह बुद्धि का काम है।

गृहस्थी मोक्ष हेतु बाधक?

हमने यह कहा है, 'विषय विष नहीं है, विषय में नीडरता ही विष है।'

मतलब, यहाँ (इसके संबंध में) स्ट्रोंग (अटल) रहनेवाला हो तो हर्ज नहीं है। यह तो गृहस्थिओं के मन में से भय निकालने के लिए बोलता हूँ कि 'भाई, तू मन में ऐसे मत घबराना कि मैं शादीशुदा हूँ और यह स्त्री मुझे नर्क में ले जाएगी। तू दो के साथ शादी करेगा तो उसके लिए अलग रास्ता है।' शादी अलग वस्तु है और मोक्षमार्ग भी अलग वस्तु है। आत्मा बिलकुल अलग है। इस देह के भीतर आत्मा बिलकुल अलग है। दोनों को कोई लेना-देना भी नहीं है, ऐसा अलग है। यह तो केवल भ्राँति है, इसलिए मन में भड़क रहती है।

प्रश्नकर्ता : ज़्या नीडरता वह लापरवाही कहलाए?

दादाश्री : मैंने नीडरता शज़्द इसलिए दिया है कि विषय में डरें, अनिवार्य हो तभी विषय में पड़े। मतलब विषयों से डरिये, ऐसा कहते हैं। ज़्योंकि भगवान तक डरते थे, बड़े-बड़े ज्ञानी भी डरते थे, तो आप ऐसे कैसे हैं जो विषय से डरते नहीं? 'मेरे लिए अब कुछ बाधक नहीं है,' ऐसा मानना विष है। इसलिए विषय से डरिये। जैसे, सुंदर खाना परोसा गया हो, आम का रस और रोटी, तो उसका भोग अवश्य करें, मगर डरकर भोग करें। डरना ज़्यों? यदि ज्यादा खा लिया तो मुसीबत हो जाएगी, इसलिए डरिये (संयम बर्तें)।

ऐसा एक साधु खोजकर तो लाइये कि जिसकी यदि आज हम शादी करवाएँ और वह महीनाभर गृहस्थी निभाए! अरे, तीसरे दिन ही भाग जाएगा। 'फलाँ चाहिए, फलाँ लाइये' ऐसा पत्नी ने कहा, कि भाग जाए। और यही साधु गृहस्थिओं को परेशान करें, कहेंगे, 'अब तुज़्हारा ज़्या होगा?' इसलिए मुझे कड़े शज़्दों का प्रयोग करना पड़ा कि 'विषय विष नहीं है, भड़कना नहीं'। मैं आपकी भड़क निकालने आया हूँ। सहज भाव से विषय भोगिये न (पति-पत्नी दोनों को जब विषय का बुख़ार चढ़े तब), सहज होना चाहिए। यदि सहज भाव से विषय भोग करें तो विषय वह विषय का ही भोग करते हैं। मगर सहज भाव से भोगना आता नहीं है न!

साहजिक मतलब?

विषय 'डिस्चार्ज स्वरूप' है। उसमें वृज़ियों से जोख़िमदारी खड़ी होती है, बखेड़ा होता है। विषय में वृज़ियाँ ज़रूरी ही नहीं है। साहजिक मतलब, बखेड़ा नहीं करना।

किसी भी तरह के साहजिक में हर्ज नहीं है, साहजिक मतलब सहमति के साथ। हमें दाढ़ी करने का भाव हुआ और बनानेवाला आकर खड़ा हो गया तो कहें, 'आइये, चलिये बैठिये भैया।' ऐसे संयोग आ मिलने चाहिए। एक भाई बताते हैं कि, 'मैं दो घंटे तक याचना करूँ तब मुझे यह विषय प्राप्त होता है।' इस पर मैंने कहा, 'कैसा आदमी है रे तू? उसके बजाय किसी कुएँ में जाकर कूद जा ताकि निपटारा हो जाए।' भीख माँगने की सीमा होती है या नहीं होती? ज़्या सीमा है? एकबार कहें कि, 'इसकी तैयारी करना।' तब यदि वह कहे कि, 'ऐसा नहीं।' तो हम कहें, 'हम जाते हैं, नहीं चाहिए, बंद अब से।'

दोनों को बुख़ार चढ़ने पर दवाई पीयें

इसलिए हमने आपसे कहा कि, 'बुख़ार चढ़ने पर दवाई पीना।' मेरी यह बात पसंद आई कि नहीं आई?

प्रश्नकर्ता : पसंद आई!

दादाश्री : ऐसा! पसंद आई हो तो आज से शुरू कर देना। पसंद नहीं आई हो तो थोड़े दिनों के बाद। हमें ज़्या जल्दी है? पच्चीस साल बाद करना! कोई जबरदस्ती थोड़े ही है? बाकी, सबसे बड़ी जोख़िमदारी तो यह विषय की जोख़िमदारी है। फिर भी हमने बताया कि, 'बुख़ार चढ़ने पर दवाई पीना तो जोख़िमदारी हमारी और आपको मोक्षमार्ग में बाधा नहीं होगी।' यह इतनी बड़ी जोख़िमदारी लेने के बावजूद आप कहते हैं कि 'हमें बराबर छूट नहीं देते' तो वह आपकी ही भूल है न? आपको ज़्या लगता है? हमारा यह 'अक्रम विज्ञान' है। स्त्री के साथ रहना। आज सभी शास्त्रों ने स्त्री के साथ रहने की ही ना कही है, तब हम रहने को कहते हैं। लेकिन साथ में यह थर्मोमीटर देते हैं कि स्त्री को दु:ख नहीं हो ऐसे विषय का व्यवहार रखना।

प्रश्नकर्ता : ऐसे बुख़ार चढ़ना बंद हो सकता है या नहीं?

दादाश्री : नहीं, वह तो फिर से चढ़े।

प्रश्नकर्ता : तो उसे बंद कैसे करना?

दादाश्री : उसे बंद मत करना। दोनों को बुख़ार चढ़े और दवाई पीयें तो जोख़िमदारी आपकी नहीं, फिर मेरी जोख़िमदारी। यदि शौक के खातिर दवाई पीते हैं तो आपकी जोख़िमदारी। मैं जानता हूँ कि आप सभी शादीशुदा हैं, मतलब सभी को यों ही ज्ञान नहीं दिया है मगर साथ-साथ अक्रम की यह जिज़्मेदारी ली है कि यहाँ तक कायदे में रहें तो जोख़िमदार मैं हूँ।

प्रश्नकर्ता : पत्नी की इच्छा नहीं हो और पति के फोर्स (दबाव) से दवाई पीनी पड़े, तो ज़्या करना?

दादाश्री : इसमें कोई ज़्या करे? किस ने कहा था कि शादी करो?

प्रश्नकर्ता : भुगते उसकी भूल। मगर दादाजी कुछ ऐसा बताइये न, ऐसी कोई दवाई बतलाएँ कि जिससे सामनेवाले मनुष्य का प्रतिक्रमण करने पर या ऐसा कुछ करने पर (उनका वह रोग) कम हो जाए।

दादाश्री : वह तो समझने से, कम हो पाए। ऐसा समझने पर कि दादाजी ने कहा है कि यह बार-बार पीने जैसी चीज़ नहीं है, तब कम हो पाए। ज़रा सीधे रहिये न! खुद का शरीर स्वस्थ रहे, दिमाग स्वस्थ रहे, तो फाइल का निपटारा हो सके। वर्ना तो डिफॉर्म हो जाए (बगड जाए)।

प्रश्नकर्ता : बुख़ार चढ़े ही नहीं ऐसा कुछ कर दीजिए न?

दादाश्री : ऐसा ही कर दिया है मगर आपको अभी...

प्रश्नकर्ता : निश्चय कच्चा है?

दादाश्री : हाँ, निश्चय कच्चा है। 'यह तो इफेज़्ट है, यह डिस्चार्ज है,' ऐसा मानने से निश्चय कच्चा पड़ जाता है।

प्रश्नकर्ता : समझ में आने पर वर्तन में आएगा ही न?

दादाश्री : समझ में ही नहीं आया। यह बुद्धिपूर्वक का सुख नहीं है, ऐसा समझ में ही नहीं आया है। मैंने जलेबी खाने की छूट दी है, खीर खाने की छूट दे रखी है। यह जो शराब पीने से सुख मिलता है वह बुद्धिपूर्वक का सुख नहीं कहलाए। सिगरेट में सुख आता है वह बुद्धिपूर्वक सुख नहीं कहलाए। वह तो यों देखा-देखी के कारण ही है।

आत्मज्ञान प्राप्ति से आत्मसुख चखा जाए

एकबार ऐसा जानना ही ज़रूरी है कि बुख़ार चढ़ने पर ही दवाई पी जाए। फिर, ऐसा तय हो गया तो फिर मन ऐसा ही तय रखता है। ज़्योंकि उसे आत्मसुख तो मिला है न! जिसे किसी प्रकार का सुख ही नहीं हो उसके लिए फिर वह विषय सुख है ही, और उसे तो हम मोड़ते ही नहीं, और उसे तो मोड़ ही नहीं सकते। जब कि हम सबको तो यह आत्मा की ओर का सुख मिला है, इसलिए खुद के (आत्मा के) सुख में मुड़ जाता है। फिर मन में जब किसी प्रकार का ज़्लेश पैदा हो, तो उस समय वह विषय की ओर नहीं मुड़ता, भीतर, आत्मा की ओर मुड़ जाता है। लेकिन जिसे ज्ञान नहीं मिला हो उसके लिए ज़्या हो सकता है? यह मोक्ष का मार्ग है, इसलिए यहाँ इतना ही समझ लेना ज़रा। ज़्या आपको यह बात पसंद आई? यह 'अक्रम ज्ञान' सही है न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, सही है।

दादाश्री : विषय की हाज़िरी में भी मोक्ष हो ऐसा यह 'ज्ञान' है न? यह हमारी खोजबीन है। बहुत उच्च तरह की खोजबीन है। आपको लड्डू, जलेबी सबकुछ खाने की छूट दे रखी है। कृपालुदेव ने तो कहा था कि, 'पसंदीदा थाली आने पर दूसरों को दे देना।' तब ज़्या किसी ने दूसरों को दे दी? ज़्या कोई भी ऐसा निकला जिसने अपनी पसंदीदा थाली दूसरों को दे दी हो? इनमें से कोई दे दे ऐसा है? वह तो केवल 'ज्ञानीपुरुष' ही ऐसा करें। जब कि मैंने तो आपसे कहा कि, 'पसंदीदा थाली खाना आराम से। आम खाना, रस खाना।' किसी ने ऐसी छूट दी नहीं है। आजतक कोई शास्त्र ऐसा नहीं कहता कि संसारी भेष में ऐसा हो सकता है। सब शास्त्रों ने तो 'स्त्री से दूर भागना' ऐसा ही कहा है। लेकिन हमने यह नयी खोजबीन की है। मेरी यह नयी वैज्ञानिक खोजबीन है। चौबीस तीर्थंकरों का संयुज़्त विज्ञान है यह।

यहाँ हम, अपनी स्त्री (पत्नी) या अपने पुरुष (पति) तक ही विषय की छूट देते हैं। उसमें ऐसी जिज़्मेदारी नहीं रहती है। इसलिए हमने छूट दी है। वर्ना शास्त्रकारों ने तो यह बिलकुल उड़ा ही दिया, 'उस (ज़्याहता) स्त्री को भी छोड़ दें' ऐसा कह दिया। पर यह तो हमारा विज्ञान है इसलिए एक ओर शांति रहे ऐसा है और इसलिए आज्ञा में रहने तैयार होते हैं। मगर, छूट दी है, इसका यदि उलटा अर्थ करे तब तो इसमें मार खा जाए न?

इसलिए हमने हलका कर दिया। इस जगत ने बाह्याचार को ही धर्म की शुरूआत माना है, लेकिन हमने कहा कि 'बाह्याचार को ही उड़ा दीजिए!' इस कलियुग में बाह्याचार को जो पकड़ने गए, उसकी तो यह सारी मार पड़ती है न! बाह्याचार तो रोंग (गलत) ही है और कलियुग में बाह्याचार जो रूपक में आया है वह तो एक भी राइट (सही) नहीं है, इसलिए हमने कहा कि जहाँ नादारी ही है तब वह बाहरी फेंक दीजिए, कट ऑफ कर दीजिए, और वह तो रिझल्ट (परिणाम) है। उसे अब लेट गो (मुज़्त) कीजिए।

यह अक्रम विज्ञान तो इस काल का अजूबा है। यह अक्रम विज्ञान तो ग्यारहवाँ आश्चर्य है। मनुष्य स्त्री के साथ रहकर जगत के दु:खों का अभाव अनुभव करे, ऐसा कभी हुआ नहीं है। सारा जगत जहाँ दु:खी है, वहाँ सांसारिक दु:खों का अभाव वह तो सबसे बड़ा पुरुषार्थ कहलाए।

इसमें मूलतः भूल कौनसी?

भगवान ने कहा था कि एक भी भूल मत

करना। गधा खेत खाए और जुलाहा मार खाए, ऐसा मत करना। जिसका कसूर हो उसको ही सज़ा देना। गधे का या जुलाहे का, दोनों में से किसका दोष है, पहले यह देखना और बाद में सज़ा करना। किंतु जगत के लोग तो, कसूर गधे का और जुलाहे को सज़ा करते हैं। 'यह गुनाह किस का है?' इसकी तलाश तो करनी चाहिए न? एक तरफ तो कहते हैं कि 'मुझे ब्रह्मचर्य का पालन करना है।' फिर कहते हैं कि 'मेरी इच्छा नहीं है फिर भी देह खिंचती है।' तो तूने उपाय ज़्या किया? तब कहे, 'देह में खाना कम डाला है।' अरे, गधा खेत खाता है और जुलाहे को ज़्यों पीटते हैं? मगर यह बात लोगों की समझ में कैसे आएगी? सोचना चाहिए न, कि मेरी इच्छा नहीं है तो देह को कौन खींचता है? यह देह तो पीन जैसा है। यदि सामने लोहचुंबक धरेंगे तो (लोहे की) पीन हिला करेगी। इस देह में 'इलैज़्ट्रिकल बॉडी' है। इसलिए समान परमाणु मिलने पर 'बॉडी' खिंचता है। मगर यह तो कहेगा कि, 'कल से अब इस देह को खाना नहीं देना है। इस देह को भूखा रखूँगा'। अरे! भूल खोज निकाल न? यह तो पूरन-गलन है, इसलिए जो पूरन किया है तो गलन होगा ही। इसलिए मूल 'रूट कोज़' (मूल कारण) खोज निकाल। मगर अपने आपको 'रूट कोज़' कैसे मिलेगा? वह तो 'ज्ञानीपुरुष' बतला सकें, इसलिए 'ज्ञानी' को खोज और ज्ञानी तो कभी-कभार होते हैं, वे तो अति-अति दुर्लभ हैं।

प्रश्नकर्ता : यह सब चेतन में कहाँ से प्रवेश कर गया? ऐसे कैसे चालू हो गया?

दादाश्री : उसे ऐसा भान हुआ कि, 'यह मैं हूँ खिंचा जा रहा हूँ।' लेकिन उसे यह समझदारी नहीं है कि एक पूतला दूसरे पूतले के करीब जा रहा है, उन दोनों में इलैज़्ट्रिसीटी होने की वजह से आकृष्ट होता है, उसका 'मैं जाननेवाला हूँ', ऐसा भान नहीं रहा उसे। 'इलैज़्ट्रिकल ऐडजस्टमेंट को लेकर चुंबकत्व उत्पन्न होता है इसलिए मुझे नहीं खिंचा जाना है फिर भी खिंचा जाता हूँ।' मतलब, यह समझ में आना चाहिए कि जो खिंचा जा रहा है वह खुद नहीं है।

यह विज्ञान तो समझ, कि खिंचता कौन है? तुझे नहीं खिंचा जाना है, तो तुझे कौन खींचकर ले गया? दूसरा कौन है मालिक जो तुझे खींचकर ले गया? तब कहता है, 'मैं खिंच गया, मेरा मन बिगड़ गया। मन निर्बल हो गया।' अरे, तेरा मन तुझे ज़्यों खिंचेगा? मन से तेरा (आत्मा का) ज़्या लेना-देना है? वह मिकेनिकल ऐडजस्टमेंट अलग, तू अलग। बोलिये अब, सारी दुनिया मार खा जाए न?

परमाणु के असर में अज्ञानता से फँसा

यह तो इलैज़्ट्रिसिटी को लेकर सारे परमाणु पावरवाले होते हैं और इसलिए परमाणु खिंचते हैं। जैसे पीन और लोहचुंबक के बीच में ज़्या कोई होता है? ज़्या पीन को हमने सिखलाया था कि ऊपर-नीचे होना?

प्रश्नकर्ता : उसे इलैज़्ट्रिसिटी छूए नहीं ऐसा नहीं हो सकता? उसे कंट्रोल नहीं कर सकते?

दादाश्री : हमसे कंट्रोल नहीं हो सकता। इलैज़्ट्रिकल वस्तु को हमेशा कंट्रोल नहीं कर सकते। हालाँकि उसे ऐडजस्टमेंट करने से पहले कंट्रोल कर सकते हैं। मगर एकबार ऐडजस्टमेंट तय हो गया फिर उसके बाद नहीं कर सकते।

यानी यह देह तो सारी विज्ञान है। विज्ञान से सब चलता है। मगर खिंचाव होता है उसे लोग कहते हैं कि 'मुझे राग हुआ'। आत्मा को कहीं राग होता है कभी? आत्मा तो वीतराग है। आत्मा को राग भी नहीं होता और द्वेष भी नहीं होता। राग-द्वेष दोनों तो खुद की कल्पना है। वह भ्राँति कहलाए। भ्राँति चली जाए तो कुछ है ही नहीं।

और फिर यह एक ही प्रकार का आकर्षण नहीं है। बच्चों पर भी मोह से आकर्षण होता है। मतलब एक प्रकार की इलैज़्ट्रिसिटी से ये सारे परमाणु लोहचुंबक जैसे हो गए होते हैं। इसलिए यदि, सामनेवाले के समान परमाणु मिलते आएँ, तो वहाँ खिंचाव होता है। अन्यत्र खिंचाव नहीं होता।

लोहचुंबक का तो हमें अनुभव है न? उसमें कौन किससे राग करता है? और यहाँ तो आप राग करते नहीं हैं न किसी को? वह लोहचुंबक जैसे स्वाभाविक है, वैसे यह भी स्वाभाविक है। पर इसमें ज़्या कहते हैं कि, 'मैंने किया', 'मैं करता हूँ' ऐसा बोले कि फिर आ लगे! या फिर कहेंगे कि, 'मुझसे ऐसा हो गया।' अरे, ज़्यों फँसता है? आकर्षण होता है उसे फिर 'यह मेरा, इतना मेरा' करता रहे। कुछ नहीं है तेरा, यह पूँजी भी तेरी नहीं है और यह मिल्कियत भी तेरी नहीं है। बिना वजह तू ज़्यों फँस रहा है? शादी की, तभी से 'मेरी वाइफ, मेरी वाइफ' करे। लेकिन शादी नहीं हुई थी उस समय? तब कहेगा, 'उससे पहले तो मेरी नहीं थी।' शादी की तब से ऐसे (मामता की) रस्सी लपेट-लपेट करे। 'मेरी', 'मेरी' करता फिरे। फिर मर जाए तब रोए। शादी नहीं की थी तब मेरी नहीं थी तो यह 'मेरी' कहाँ से घुस गया? अब 'नहीं है मेरी', 'नहीं है मेरी' करना, ताकि हमारा लपेटा हुआ खुल जाए। लोग ज़्या कहेंगे, 'माया को तूने पकड़ा है, तो छोड़ दे।' मगर कैसे छूट पाए? इसलिए 'ज्ञानीपुरुष' सब छुड़वा दें। 'ज्ञानीपुरुष' खुद मुज़्त हुए होते हैं, वे सभी को छुड़वा दें। वे अपने 'साइन्टिफिक' (वैज्ञानिक) तरीके से रास्ता दिखलाए कि ऐसे छूटा जाए, वर्ना छूटने का अन्य कोई रास्ता नहीं है। मतलब कि मोक्षमार्ग को समझना है। मात्र समझ-समझ करना है।

अहंकार करे केवल अहम्कार ही!

भगवान कहते हैं, जो कंट्रोल में नहीं हैं वे विषय हैं। 'मैं विषय भोगता हूँ' ऐसा अहंकार करता है। यदि तू विषय भोगता तो तुझे संतोष होना चाहिए, मगर ऐसा नहीं है। विषय वह तो परमाणु का हिसाब है। प्रत्येक इन्द्रिय अपने विषय में निपुण है लेकिन अन्य विषय में निपुण नहीं है। नाक को जलेबी चखाएँ तो ज़्या मीठी लगेगी? परमाणुओं का हिसाब होता है और वह चुकता हो, वह विषय नहीं है। लेकिन उसमें तन्मयता वही विषय है। उसमें इन्द्रियों का भी कोई रोल नहीं है, वे तो केवल कन्वे (वहन) करती हैं। इसलिए ही हम कहते हैं कि इन्द्रियों के विषय जीतनेवाला जितेन्द्रिय जिन नहीं है लेकिन जिसकी दृष्टि द्रष्टा में पड़ गई है, जिसका ज्ञान ज्ञाता में आ गया है, वह जितेन्द्रिय जिन है। भगवान महावीर भी ऐसा ही कहा करते थे।

मोह छूटे पारिणामिक दृष्टि से

यह पूरण-गलन (चार्ज-डिस्चार्ज) का 'साइन्स' समझ में आ जाए उसे विषयसुख फिके लगने लगें। यदि जलेबी धूल में गिर गई हो, तो भी झाड़कर खा जाए। उस समय, सबेरे उस जलेबी की ज़्या दशा होगी उसका भान रहे ज़्या? नहीं। ज़्योंकि अशुचि का भान नहीं है। यदि खीर खाई हो फिर उलटी करने पर कैसी दिखाई दे? यह अंदर सारा अशुचि का संग्रहस्थान ही है। मगर ऐसी पारिणामिक दृष्टि उत्पन्न होनी चाहिए न?

विषय दोष के जोख़िम-भयस्थान

यह तो भयस्थान है, यह अकेला ही भयस्थान है। पुरुषों के लिए स्त्री वह भयस्थान है और स्त्रियों के लिए पुरुष वह भयस्थान है। अन्य कोई भय नहीं है। जिसके प्रति कुछ आकर्षण उत्पन्न होता है ऐसा आकर्षण हर जगह नहीं होता है। वह पूर्वभव का हिसाब होने पर ही होता है, वहाँ बहुत जागृत रहना पड़ता है।

दृष्टिदोष के गुनाह

विषय तो कब था? द्वापरयुग में, त्रेतायुग में और सत्युग में विषय था, तब उसमें से सुगंध आती थी। ऐसे सुगंधधारी विषय थे। आज तो निरी दुर्गंध है। बात सुनने पर ही सिर दु:खने लगे। आज विषय जैसा रहा ही कहाँ है? यह तो पाशवता है।

यह तो सब खाते-पीते हैं उतना ही, बाकी भान ही नहीं है। यदि भान होता तो फिर अपने घर पर चार बेटियाँ होने पर भी दूसरों की बेटियों को खराब दृष्टि से देखते ही नहीं। उसे विचार आना चाहिए कि

मेरी बेटियों को कोई ऐसी दृष्टि से देखे तो ज़्या होगा? मगर उन लोगों को यह भान ही नहीं है। भान ज़्यों नहीं है? ज़्योंकि वे नासमझ है और अहंकार अत्यधिक है। अहंकार मतलब अँधा ही। यदि लोभ में अहंकार होता है तो लोभ में अँध होता है। मान का अहंकार होने पर मान में अँध होता है। विषय में होने पर विषय में अँध होता है। यानी मूल अहंकार पूरा अँधा ही है इसलिए उसे जिसमें डाला उसका अँधापन होता है, फिर वह उलटा ही किया करे।

लौट आएँ, परस्त्री दोष के जोख़िम से

एक आदमी को कोई विकारी बुरी आदत थी। उस आदत को छुड़वाने मैंने उससे कहा, 'इस गंदगी में ज़्यों पड़ता है? दूसरी कई चीज़ें हैं उन्हें इस्तेमाल किया करो न? सेंट, इत्र आदि रख छोडिये न! यह तो तुज़्हें पसंद है न?' तब वह कहे, 'हाँ, मुझे पसंद है।' मतलब ऐसा करके मन को समझा-बूझाकर काम निकाल लेना। इस तरह मिठी गोलियाँ खिलाना। एक गोली नहीं हो तो दूसरी देना, दूसरी भी अनुकूल नहीं आई तो तीसरी। ऐसे तरह-तरह की मिठी गोलियाँ (ज्ञान के ऐडजस्टमेंट) बतलायी है वह देना। किसी भी गोली में मन लग गया तो काम चल गया। फिर उस गंदगी से तो बाज़ आए न!

मानवता का अधिकार कितना? कि जो खुद की ज़्याहता हो उतना ही, अपने अधिकार का हो उतना अपना और दूसरा पराया नहीं ले सकते। मेरा सो मेरा और तेरा सो तेरा। तेरा मुझे नहीं चाहिए और मेरा तुझे दूँगा नहीं, यह मानवता कहलाए।

जिसे परस्त्री (या परपुरुष) का त्याग हुआ, वह भगवान होने लगे। परस्त्री का रोग तो बहुत बड़ा होगा कि नहीं? वह तो बहुत बड़ा कहलाए। इसके कारण ही जगत खड़ा रहा है। ऐसा गायों-भैंसों में चल सकता है, वहाँ तो मंडप भी नहीं है और ब्राह्मण भी नहीं है। गायों-भैंसों में मंडप होता है? वहाँ ब्राह्मण को नहीं बिठाते न? और यह मनुष्यों में तो विवेक किया जाता है, कुदरत का बंधन ही ऐसा है। मनुष्य में आया इसलिए बंधन ही होता है, महामुश्किल।

तुझे कुछ पछतावा होता है यह सुनकर?

प्रश्नकर्ता : बहुत ही होता है।

दादाश्री : पछतावे में जले तब भी पाप खलास हो जाएँ। यह बात सुनकर दो-चार लोग मुझसे कहें कि, 'हमारा ज़्या होगा?' मैंने कहा, 'भैया, तुझे मैं ठीक कर दूँगा, तू आज से सयाना हो जा।' जागे वहाँ से सवेरा। उसकी नर्कगति उड़ा दूँ। ज़्योंकि मेरे पास (विज्ञान के) सारे रास्ते हैं। मैं कर्ज़ा नहीं हूँ, इसलिए। यदि कर्ज़ा बनूँ तो मुझे बंधन होगा। किंतु मैं तो आपको ही बतलाऊँ कि ऐसा कीजिए अब। ताकि सब उड़ जाए, और हम भी आपके लिए ऐसी दूसरी विधियाँ करते हैं।

प्रश्नकर्ता : दोनों की सहमति हो, ज़्या तब भी उसमें जोख़िम है?

दादाश्री : सहमति होने पर भी जोख़िम है। दोनों आमने-सामने खुश हों उसमें कौन-सी कार्यसिद्धि हुई? (अगले जनम में) वह जहाँ जानेवाली हो वहाँ हमें जाना पड़े। हमें मोक्ष में जाना है और उसके धंधे ऐसे हैं, तो हमारी ज़्या दशा होगी? इसका ताल-मेल कैसे बैठे? इसलिए प्रत्येक शास्त्रकारों ने हरएक शास्त्र में कहा है कि, 'विवेक करना, शादी कर लेना।' वर्ना यदि हरहा पशु हो तो फिर किस का घर आबाद रहे? फिर 'सेफसाइड' (सुरक्षासीमा) ही ज़्या रहे? किस तरह से 'सेफसाइड' रहे? तू ज़्यों नहीं बोलता कुछ? पिछली चिंता में पड़ गया ज़्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ, जी।

दादाश्री : तेरा वह पिछला मैं धो दूँगा। हमें तो इतना चाहिए कि हमसे मिलने के बाद फिर कोई दखल (विषय दोष) नहीं है न? पिछली जो भी दखल हो, उसमें से मुज़्त करने के हमारे पास कई रास्ते (उपाय) हैं, तू मुझे अकेले में बता देना। मैं वह

सब तेरा धो दूँगा। कलियुग में मनुष्य से ऐसी बहुत सी गलतियाँ होती ही रहती है। कलियुग है और भूल नहीं हो, यह तो संभव ही नहीं है न!

सतीत्व होने पर मोक्ष पज़्का

कुछ भी हो जाए, पति नहीं हो, पति चला गया हो, तब भी दूसरे के पास नहीं जाए। चाहे कोई भी हो, खुद भगवान भी पुरुष का रूप लेकर आए हों, मगर नहीं, 'मेरे लिए तो केवल मेरा पति ही सबकुछ है, मैं पतिव्रता हूँ', ऐसा जिसे है वह सती कहलाए। ज़्या आज लोगों में ऐसा सतीत्व है? हमेशा नहीं है ऐसा, आज जमाना अलग तरह का है न? किंतु सत्युग में तो सतियाँ होती थीं। इसलिए लोग आज भी सतियों को याद करते हैं न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, जी।

दादाश्री : सती होने की इच्छा से, उनका नाम लिया हो तो भी कभी सती हो सकती है, और आज तो विषय चूडियों के मोल बिकता है, इसका आपको पता है? नहीं समझे मेरा ज़्या कहना है?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, चूडियों के मोल बिकता है।

दादाश्री : किन बाज़ारों में बिकता है? कॉलिजों में। किस भाव से बिक रहा है? सोने के भाव से चूडियाँ बिके। कहीं हीरों के भाव से चूडियाँ बिके। हर जगह ऐसी मिल आती हैं, मगर सब ऐसी नहीं होती। कुछ तो सोना देने पर भी नहीं ले। चाहे कुछ भी ज़्यों नहीं दे, नहीं लेगी। मगर अन्य तो बिक जाएगी। आज की स्त्रियाँ सोने के भाव नहीं बिकेगी तो अन्य भाव से भी बिक जाएँगी।

मान लीजिए कोई मांसाहार नहीं करता। मगर दो-तीन दिन का भूखा हो, और मरने की नौबत आई तो ज़्या मांसाहार करेगा? मांसाहार करे ही नहीं। चाहे कुछ भी हो जाए। ऐसा बोलेगा भी, 'मर जाऊँगा, मगर मांसाहार नहीं करूँगा। कभी भी नहीं करनेवाला, भूख से मर जाना पड़े तो बेहतर है।' मगर दो-तीन दिन के बाद भूख के कारण मर जाए ऐसा लगे तब? कोई मांस दिखलाए तब?

प्रश्नकर्ता : तो शायद कर डाले, जान बचाने के लिए।

दादाश्री : कर ही डाले। और इस अवस्था में भी नहीं करे वह 'सती' (सतीज़्व) कहलाए। जैसा मुँह से बोले वैसा ही बर्ते उसे। मर जाऊँगा, मगर नहीं करूँगा।

मतलब, यह विषय को लेकर स्त्री हुआ है, केवल इस विषय के कारण ही, और पुरुष ने उसे भोगने के लिए प्रोत्साहित की और बेचारी को बिगाड़ा। खुद में (स्त्री में) बरकत नहीं हो फिर भी वह ऐसा मन से मान ले कि बरकत है । तब कहे, 'मान ज़्यों लिया? कैसे माना?' पुरुषों ने बार-बार दोहराया इसलिए वह (स्त्री) मान ले कि यह कहता है उसमें गलत ज़्या है? अपने आप ही मान लिया हो। आपने कहा हो, 'तू बहुत अच्छी है, तेरे जैसी स्त्री तो ढूँढने से भी दूसरी नहीं मिलेगी।' उसे कहें कि तू रूपवती है तो वह खुद को रूपवती मान ले। इन पुरुषों ने स्त्रियों को स्त्री के तौर पर ही रखा है। स्त्रियाँ भी मन में मानें कि मैं पुरुषों को बनाती हूँ, मूर्ख बनाती हूँ। ऐसा करके पुरुष उसको भोग लेते हैं और फिर निकल जाते हैं। उसके साथ ऐसे भोगकर अलग हो जाते हैं मानों रास्ते पर भटकता कोई .... हो। ज्यादा समझ में नहीं आता है न? थोड़ा-थोड़ा समझ में आता है ज़्या?

प्रश्नकर्ता : समझ में आता है कज़्पलीट (पूरा)। पहले, सत्संग में जब यह बातें निकली थीं तब मैं ऐसा समझा था कि पुरुषों का कोई दोष नहीं है, पर आज बात निकली तब लगा कि इसमें पुरुष की बहुत बड़ी जिज़्मेदारी बनती है, इस तरीके से।

दादाश्री : पुरुष ही जिज़्मेदार है। स्त्री को स्त्री के तौर पर रखने में पुरुष ही जिज़्मेदार है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादाजी। मतलब ऐसा नहीं है

कि स्त्री जो है वह लज़्बे अरसे तक स्त्री जाति में ही रहेगी, मगर उनको पता नहीं है इसलिए उपाय नहीं होता है, ऐसा न?

दादाश्री : उपाय होने पर स्त्री वह पुरुष ही है। उस गाँठ को पहचानती नहीं है बेचारी और उसमें इन्टरेस्ट आता है (अभिरुचि है), मज़ा आता है इसलिए पड़ी रहती हैं। कोई ऐसा रास्ता जानता नहीं इसलिए बतलाता नहीं। यह केवल सती स्त्रियों को पता होता है, सतियों को तो उनके पति, के अलावा अन्य किसी का विचार तक कभी भी नहीं आता। उसका पति चल बसे तब भी नहीं। एक ही पति को पति माने। इसलिए उन स्त्रियों का सारा कपट पिघल जाए। किस का कपट पिघल जाए?

प्रश्नकर्ता : सतियों का, सती स्त्रियों का।

दादाश्री : जो स्त्री बिलकुल सती के तौर पर रहती है उसके सारे रोग मिट जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आज हम अपने सारे दोष आपको बतलाएँ तो हम आपके ज्ञान के द्वारा सती बन सकें न?

दादाश्री : कोई स्त्री पहले से ही सती नहीं होती, और बिगड़ जाने के बाद भी सती हो सकती है। जब से निश्चय किया तब से सती हो सके।

प्रश्नकर्ता : और जितनी उस सतीत्व की रक्षा करेंगे उतना कपट पिघलता जाएगा?

दादाश्री : सतीत्व का निश्चय हुआ तब से कपट तो अपने आप चलता ही बने। आपको कुछ कहना नहीं पड़ता। वह मूल सती तो जन्म से ही सती होती है, इसलिए उनको पहले का कोई दाग़ ही नहीं होता। और आपको पहले के दाग़ रह जाएँ और फिर से आप पुरुष होते हैं। लेकिन पुरुष जाति में भी, सभी पुरुष समान नहीं होते हैं। कुछ पुरुष स्त्री जैसे होते हैं। थोड़े स्त्री के लक्षण शेष रहते हैं और फिर कपट पिघल जाता है। यदि बाद में शायद सतीत्व आए तो फिर कपट खतम ही हो जाए। पुरुष होने पर सती के समान शुद्ध हो जाए तो कपट खलास हो जाए। सतीत्व से सब नष्ट हो जाता है। जितनी भी सतियाँ हुई थीं उनका सारा मोह नष्ट हो गया था और फिर वे मोक्ष में भी गई थीं। समझ में आता है थोड़ा? मोक्ष में जाने के लिए सती होना पड़ेगा। हाँ, जितनी सतियाँ हुईं वे सभी मोक्ष में गईं। वर्ना, पुरुष होना पड़े। पुरुष बेचारे भोले होते हैं। जैसे नचाए वैसे नाचे बेचारे। सभी पुरुषों को स्त्रियों ने नचाया था। स्त्रियों में केवल सती स्त्रियाँ ही नहीं नचाती। सती तो पति को परमेश्वर (भगवान) माने।

प्रश्नकर्ता : ऐसा जीवन बहुत कम लोगों का देखने में आता है।

दादाश्री : इस कलियुग में कहाँ से होंगी? सत्युग में भी कोई-कोई ही सती होती है, तब फिर आज कलियुग में कहाँ से होंगी?

आमने-सामने करारी दावे

यह संसार अब्रह्मचर्य से खड़ा रहा है और ऐसा कई काल तक चलता रहेगा। जो निकाचीत दु:ख हैं वे अब्रह्मचर्य के हैं। निकाचीत दु:ख माने सहन करने पर भी खिसके नहीं। चाहे कितने भी उपाय करें मगर खिसके नहीं। अन्य सभी दु:ख तो सहजासहज जाते रहें। जब कि निकाचीत में तो दूसरे व्यज़्ति का ज़्लेइम रहता है। अन्य सभी वस्तुएँ ज़्लेइम (दावा) नहीं करतीं, मगर इस विषय में तो आप 'प्रसंग' को छोड़ दें तो भी वह (व्यज़्ति) दावा दायर करे या तो आपके साथ बैर बाँधे। इससे फिर ज़्लेइम ही खड़े होते हैं।

दो पार्टी के बीच करार होने पर, एक पार्टी जहाँ जाए वहाँ दूसरी पार्टी को जाना पड़े, करार पूरा करने। इसलिए यह (विषय) ४०० वॉल्ट का पावर कहलाए। ४०० वॉल्ट सामने आने पर उसे छूते नहीं हैं, समझ जाएँ कि ४०० वॉल्ट है। वहाँ पर (बिजली के बज़्से पर) भय के सिग्नल (सावधानी के निशान) लगाए होते हैं न? ऐसा यह भय का सिग्नल मैं दिखा देता हूँ। यह अक्रम विज्ञान है, भय सिग्नल इतना ही है। अन्य कोई भय नहीं है। और हमारे पाँच वाज़्यों

(आज्ञा) में रहें तो किसी प्रकार का भय सिग्नल ही नहीं है। हमने जो विज्ञान दिया है वह पूर्ण ज्ञान ही है। वे पाँच वाज़्य उसकी हैल्प (मदद) करते हैं। वे वाज़्य प्रोटेज़्ट (रक्षण)करते हैं और आप शुद्धात्मा हैं।

इसमें लाचारी से बैर बँधे

एक स्त्री अपने पति को चार बार साष्टांग करवाती है तब एकबार छूने देती है। तब ऐसा करने के बजाय वह यदि दरिया में समाधि लेता हो तो ज़्या गलत है उसमें? चार बार साष्टांग किस के खातिर?

प्रश्नकर्ता : इसमें स्त्री ऐसा ज़्यों करती है?

दादाश्री : वह एक प्रकार का अहंकार है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन उसको फिर ज़्या फल मिलेगा?

दादाश्री : कोई फायदा नहीं। मगर ऐसा एक प्रकार का अहंकार कि 'देखा न, कैसा सीधा कर दिया मैंने?' और वह बेचारा, मारे लालच के ऐसा करेगा भी। मगर स्त्री को फिर इसका फल भुगतना तो पड़ेगा न?

प्रश्नकर्ता : उसमें, स्त्री अपने स्त्रीत्व का बचाव करती है ज़्या?

दादाश्री : नहीं, स्त्रीत्व का बचाव नहीं। वह अहंकार ही है, रौब जमाने के लिए है। और उसको बंदर की तरह नचाए। फिर उसके 'रीएज़्शन' (प्रतिघात) तो आएँगे ही न? वह भी बैर रखेगा कि, 'मैं तेरी लपेट में आया तब तूने मेरी ऐसी गत बनाई और मेरी इज़्ज़त ली। तू लपेट में आए इतनी देर है।' मतलब लपेट में आने पर ले ले इज़्ज़त, पलभर में धूलधानी कर डाले फिर।

विषय के लालची को यदि कोई औरत विषय के लिए मना करे, तो उसके पाँव पड़कर विषय की भीख माँगे, ऐसे बेभान मनुष्य हैं। मेरा यह कहना है कि आत्मसुख चखने के बाद विषय सुख की ज़रूरत ही कहाँ रहती है!

हमारा ज्ञान ज़्या कहता है? जगत में भोगने जैसा ज़्या है? तू बिना वजह इसमें व्यर्थ प्रयत्न में लगा है। भोगने जैसा तो आत्मा है।

प्रश्नकर्ता : वह इन लालचों में से छूटना चाहे तो कैसे छूटे?

दादाश्री : वह यदि इसके लिए निश्चय करे तो सब छूटे। लालच से छूटना तो चाहिए ही न? खुद के हित के लिए है! निश्चय करने के बाद, (विषय में से) छूटने के बाद उस तरफ (आत्मा की ओर) सुख ही लगेगा, उसमें ज्यादा सुख लगेगा, चैन महसूस होगा। यह तो उसे भय है कि मेरा सुख चला जाएगा। लेकिन वह (विषय) छूटने के बाद तो ज्यादा सुख का अनुभव होगा।

विषय छूटने पर ज़्लेश समाप्त

जिसे ज़्लेश नहीं करना है, जो ज़्लेश का पक्ष नहीं लेता, उसे ज़्लेश होगा मगर आहिस्ता-आहिस्ता बहुत कम होता जाएगा। ज़्लेश करना ही चाहिए, ऐसी मान्यता है तब तक ज्यादा ज़्लेश होता रहे। हमें ज़्लेश के पक्षकार नहीं बनना चाहिए। 'ज़्लेश करना ही नहीं है' ऐसा जिसका निश्चय है, उसे कम से कम ज़्लेश हो ऐसे संयोग आ मिलते हैं। और जहाँ ज़्लेश है, वहाँ भगवान खड़े ही नहीं रहते न!

इस संसार में यदि विषय नहीं होता तो ज़्लेश ही नहीं होता। विषय है इसलिए ज़्लेश है, वर्ना ज़्लेश ही नहीं होता। विषय को यदि इज़्ज़ैज़्ट (यथार्थरूप से) न्यायबुद्धि से देखा जाए तो फिर से विषय करने का मनुष्य को मन ही नहीं करेगा।

प्रश्नकर्ता : मगर विषय चीज़ ही ऐसी है कि वह न्याय बुद्धि से देखने ही नहीं दे न?

दादाश्री : यह विषय ऐसी वस्तु है कि एक बार अंध होने के बाद देखने नहीं दे। सबसे भारी अँधापन यानी लोभांध और दूसरे नंबर पर होता है तो विषयांध।

प्रश्नकर्ता : लोभांध वह अधिक कहलाए?

दादाश्री : अरे, लोभांध की तो दुनिया में बात ही अलग है! विषयांध तो मोक्ष में जाने का प्रयत्न करे ज़्योंकि विषयवालों को तो ज़्लेश होता है न, इसलिए फिर ऊब जाते हैं। जब कि लोभांध को तो ज़्लेश भी नहीं होता। वह तो उसकी लक्ष्मी के पीछे ही लगा होता है, लक्ष्मी की बाबत में कोई नुकसान नहीं होता न, यही देखा करे और उसमें ही वह खुश रहे। बेटों के घर पर बेटे होते हैं फिर भी उसे लक्ष्मी से ही लगाव होता है, और लक्ष्मी की रक्षा करने अगला भव साँप होकर बरबाद करे।

घर में विरोध-विक्षेप का मूल कारण

प्रश्नकर्ता : विषय बंद करने के बावजूद टकराव नहीं टलते हैं इसलिए तो हम आपकी शरण में आए हैं।

दादाश्री : फिर टकराव होता ही नहीं। विषय जहाँ बंद है वहाँ मैंने देखा है, जितने-जितने मज़बूत मन के पुरुष हैं उनकी पत्नी तो बिलकुल उनके कहे में रहती है।

एक आदमी तो बेचारा, दादा के ज्ञान से खुश हो गया था। रोज़ाना दर्शन करने आता था। यहाँ सारा दिन पड़े रहने का मन करे, पत्नी को कभी लेकर नहीं आता था। पत्नी उसे रोज़ धमकाती रहती, कहती, 'ज़्यों दादा के वहाँ गए?' वह मुझसे कहता, 'मैं ज़्या करूँ, यह आने ही नहीं देती, इसे कैसे वश में करना?' मैंने उसे बताया कि, 'दो-तीन महीने तक विषय का विचार तक नहीं आने देना, ज्ञान तो तूने लिया ही है, फिर हो सकेगा या नहीं हो सकेगा?' वह बोला, 'हाँ जी, हो सकता है।' मैंने कहा, 'करके देखना'। फिर उसकी पत्नी उसे कहती है, 'आप जब जाना चाहें तब जाना, मगर मेरे साथ ऐसा मत करना।' यह (आप सबको) उदाहरण दिया, ऐसा हुआ है।

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, ऐसी दूसरी दो-चार दवाइयाँ बतलाइये न?

दादाश्री : नहीं। यह तो जो घटना घटी वह मैंने कही आपको। मुझे कुछ नया बनाना है ज़्या? मुझे तो यह पहले से ही आता था।

प्रश्नकर्ता : दूसरे ऐसे उपाय आते हों तो बतलाइये। आप ज़्या-ज़्या करते थे दादाजी?

दादाश्री : सारा कुछ थोड़े ही याद रहता है? मुझे तो सब याद नहीं रहता। यह तो अंदर देखने में आता है तब बोल देता हूँ। वह आदमी आने लगा, राज़ी-खुशी से। मैंने कहा, 'देख, मेरी दवाई, यह विद्या फिर काम आएगी, इसे पकड़े रहना, मेरी यह खोजबीन है।' दादा के पास से यह जो सीखने मिला, ऐसा कोई पुस्तक में नहीं लिखा होता है। पुस्तक में लिखनेवाले लोग तो साधु थे, उनको पत्नी ही नहीं थी। यह तो मुझे खुद ही टेस्ट (प्रयोग) करना पड़ा है।

प्रश्नकर्ता : और ज़्या-ज़्या खोजबीन की थी, बतलाना ज़रा!

दादाश्री : वह तो समय आने पर बतलाते ही रहते हैं। जैसे-जैसे दिन गुज़रते जाएँ, (वाणी में) निकलता जाए। सबकुछ आज ही नहीं निकल जाता।

यदि आपको घर में रोज़ाना विरोध-विक्षेप पसंद नहीं हो, तो पत्नी के साथ विकारी संबंध ही बंद कर देना। पाशवता बंद कर देना। विषय तो निरी पाशवता ही है। यदि उसकी फोटो ली जाए तो कैसी दिखाई दे? कुज़ों जैसा दिखाई दे न? मतलब पाशवता बंद कर देना। बुद्धिमान हो, समझदार हो तो ज़्या उसे ऐसा विचार नहीं आएगा? फोटो ली जाए तो कैसा दिखे? फिर भी शर्म नहीं आती? मेरे ऐसा कहने पर विचार आए, वर्ना ऐसा विचार भी कहाँ से आएगा? आपको जब तक यह विकारी संबंध है तब तक विरोध-विक्षेप रहेगा ही। इसलिए हम आपके विरोध-विक्षेप के बीच में आते ही नहीं। हमें मालूम है कि उसके साथ विकार बंद होगा, तब उसके साथ बखेड़ा बंद हो ही जाएगा। एकबार उसके साथ

विकार बंद कर दिया न, फिर तो यदि यह उसे डाँटे तो भी वह कुछ नहीं बोलनेवाली, ज़्योंकि वह जाने कि 'अब मेरी गत होनेवाली है'! मतलब, हमारी भूल से यह सब खड़ा है। हमारी भूल के कारण ही ये सारे दु:ख हैं। वीतराग कितने सयाने होंगे? भगवान महावीर तो तीसवें साल ही मुज़्त हो गए थे।

उनके साथ (फाइल नंबर २ के साथ) विषय संबंध बंध करने के अलावा दूसरा उपाय मिला ही नहीं। ज़्योंकि इस जगत में राग-द्वेष का मूल कारण ही विषय है। मौलिक कारण यही है, यहाँ से ही सारा राग-द्वेष खड़ा हुआ है। संसार सारा यहीं से ही खड़ा हुआ है। इसलिए संसार बंद करना हो तो यहाँ से ही बंद करना पड़े। फिर आम खाइये, चाहे सो खाइये न। महँगे आम खाने पर भी कोई पूछनेवाला नहीं है। ज़्योंकि आम आपके विरुद्ध दावा दायर करनेवाले नहीं है। आप उसे नहीं खाएँ तो वे ज़्लेश नहीं करनेवाले। और इस संबंध में तो आप कहेंगे कि, 'मुझे नहीं चाहिए' तब वह कहेगी कि, 'नहीं, मुझे तो चाहिए ही।' वह कहे कि, 'मुझे सिनेमा देखने जाना है' तब आप नहीं जाएँ तो ज़्लेश। आ ही बनी समझो। ज़्योंकि सामने मिश्रचेतन है और करारबद्ध है, इसलिए दावा दायर करे।

पिता की योग्यता का प्रमाण

अपने घर के सभी मनुष्य पर बिलकुल कंट्रोल रखना चाहिए। वर्ना फिर जब नाक कटेगी तो शोर मचेगा। खुद शीलवान होगा तो बेटियाँ शीलवान होंगी। वर्ना खुद का ही ठिकाना नहीं हो तो बेटियाँ बिगड़ ही जाएँ न फिर। पिता का बाहरी व्यवहार ऐसा नहीं होना चाहिए कि बेटियों के मन में पिता का ज़रा-सा भी दोष देखने में आए। बेटियों को पिता का एक भी दोष नहीं दिखाई दे, पिता को इस प्रकार जीवन जीना चाहिए। किंतु आज के पिता कैसे हैं? ये तो आधे जानवर ही हैं। पिता तो कैसे होते हैं कि संतानों को पिता के किसी भी निची मामले का पता ही नहीं चले।

मैंने तो हमारे गाँव में ऐसे-ऐसे मनुष्य देखें हैं कि हमारे दिल में सज़्मान पैदा हो। हमारे गाँव में ऐसे भी मनुष्य हैं कि स्त्री और पुरुष सालभर में दो या तीन बार ही 'साथ' होते हैं और बाकी समय में दोनों के कमरे अलग। मकान एक ही, खाना-पीना एक ही जगह में, मगर सोने के कमरे अलग, एक दूसरे की हवा तक नहीं आने देते। हमारे गाँव में ऐसा एक मनुष्य था, बड़ा मर्द मनुष्य, आँख ज़रा उठाकर देखे तो हजारों मनुष्य सहम जाएँ, ऐसा पौरुषवान! उसके सामने आज के ये लोग तो सारे जंतु लगे बेचारे।

प्रश्नकर्ता : पहले तो सामाजिक भय भी बहुत थे न?

दादाश्री : हाँ, उस सामाजिक भय की ज़रूरत थी। उस भय से ही लोग सीधे रहते थे। हमारे समय में तो विचार तक नहीं आते थे (विषय के)। लड़के-लड़कियाँ साथ घूमे फिर भी विचार तक नहीं आते थे। वैसे संस्कार ही नहीं थे।

आज तो लोगों को बहुत ज्यादा विषय-विकार पैदा हो गए हैं। और फिर बड़ी उम्र में संतानों की शादियाँ रचायी मतलब ज़्या होगा? लड़की का भी चिज़ खलास हो गया हो और लड़के का चिज़ खलास हो गया हो। सारी चिज़वृज़ि ही खलास हो गई हो।

ऐसी प्रथाएँ बिगाड़े चिज़वृज़ियाँ

प्रश्नकर्ता : सभी व्यवहार वह कुदरत ही है न?

दादाश्री : हाँ, वह कुदरत ही है। वह कुदरत से बाहर नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो फिर यह ब्रह्मचर्य की बातें करते हैं, वह अकुदरती नहीं हो रहा ज़्या?

दादाश्री : अकुदरती करने की ज़रूरत इसलिए है कि यह विषय एक ऐसी वस्तु है कि मन और चिज़ जैसे जा रहे हों वैसे नहीं रहने देता, और एकबार इसमें पड़ने पर, इसमें आनंद है ऐसा मानकर, चिज़ का वहाँ

ही जाना बढ़ जाता है और 'बहुत अच्छा है, बहुत मज़ेदार है' ऐसा मानकर निरे अपार बीज डालते हैं।

प्रश्नकर्ता : कुछ लोगों को तो विषय में रुचि ही नहीं होती है। रुचि उत्पन्न भी नहीं होती और कुछ लोगों को अधिक मात्रा में रुचि होती है। ऐसा वे पूर्वभव का ही लेकर आए होते हैं न?

दादाश्री : यह केवल विषय ही ऐसा है कि उसमें बहुत गड़बड़ हो जाती है। एकबार विषय भोग करने के बाद चिज़ वहीं पर जाता है।

प्रश्नकर्ता : मगर वह ऐसा पूर्वभव का लेकर आया होता है न?

दादाश्री : वह पूर्वभव का लेकर नहीं आया, मगर उसका चिज़ वहीं पर जाता है। फिर उसका चिज़ काबू में नहीं रहता। खुद के विरोध करने पर भी काबू में नहीं रहता। इसलिए ये लड़के ब्रह्मचर्य के भाव में रहें तो अच्छा, मगर ये लड़के यदि एक ही बार विषय को छू लें न, तो फिर रात-दिन उसके ही सपने आते रहें।

प्रश्नकर्ता : ये जो साथ में सोने की प्रथा है, वह अमुक प्रथाएँ ही गलत है न?

दादाश्री : सारी प्रथाएँ गलत हैं। समझदार प्रजा नहीं है इसलिए उलटा घुसेड़ दिया है सबकुछ। फिर लड़के-लड़कियाँ ऐसा ही मान लेते हैं कि ऐसा ही होता है। यही मुज़्य वस्तु है। ऐसा होने पर भी यदि स्त्री का चिज़ उसके पति में ही हमेशा रहता हो तो हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : मगर वह हमेशा रहता नहीं है न?

दादाश्री : अरे, दूसरे को देखते हैं तब फिर बखेड़ा करते हैं। इसलिए झँझट है। यानी मूल में से उड़ा देने जैसी वस्तु है। उससे ही सारा संसार खड़ा रहा है। विकार में 'निर्विकार' होना आता नहीं है। विकार में निर्विकार होना यदि आ जाए तो उसका सारा वीर्य ऊर्ध्वगामी होता है।

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, मगर विकार में निर्विकार होना यह कोई बच्चों का खेल नहीं है न?

दादाश्री : वह बच्चों का खेल नहीं है। फिर भी ज्ञानीपुरुष की आज्ञा से विकार में निर्विकार रहा जाए ऐसा है। वर्ना आज्ञा कैसे दी जाए? जो होनेवाला है, उसे छोड़ा कैसे जाए?

प्रश्नकर्ता : ज्ञानीपुरुष की आज्ञा से भी विषय का फॉर्स बहुत भारी होता है न? इसलिए वह आज्ञा-बाज्ञा सब फेंक देता है न?

दादाश्री : नहीं, जिसका निश्चय हो, तो हमारी आज्ञा उसका काम किया करे। अनेक लोगों का काम करती है।

व्रत कराए आत्मा का स्पष्ट अनुभव

सबसे बड़ी आपज़ी तो बाहर सब जगह दृष्टि खराब रखने में है। दूसरे, उससे आगे इसमें ज़्या करना पड़े कि जैसे स्कूलों में डेढ़ महीने का वेकेशन होता है न, ऐसा छः महीने का वेकेशन इस विषय में ले लिया जाए तो उसे मालूम हो जाए कि सच्चा सुख कहाँ से आता है? मतलब यह तो उसे सुख आता है यह निश्चित है, मगर परीक्षा नहीं होती कि सच्चा सुख कौन-सा? हमें देखिये न, चौबीस घंटे यदि किसी कमरे में अकेले बिठा रखें न, तब भी वही आनंद होता है, साथ में कोई एकाध मनुष्य हो तब भी वही आनंद होता है और लाखों मनुष्य होने पर भी वही आनंद होता है। उसका ज़्या कारण है? हमें निरालंब सुख उत्पन्न होता है, हमें अवलंबन नहीं चाहिए। सारा जगत, जीव मात्र पारस्पारिक है, मतलब एक-दूसरे का अवलंबन चाहिए। इसलिए तो लोगों ने शादी की खोजबीन की है, कि शादी कीजिए ताकि पारस्परिक अवलंबन मिलता रहे।

'मैं शुद्धात्मा हूँ' वह शाज़्दिक अवलंबन है। मगर वह (मोक्ष मार्ग में) प्रवेश के लिए हरी झंडी है। और सबसे आखिर निरालंब आत्मा, जिसे शाज़्दिक या किसी प्रकार का अवलंबन नहीं, ऐसा

निरालंब आत्मा। गाड़ी अब वहाँ तक जाएगी। मगर एकबार शज़्दावलंबन से गाड़ी चलनी चाहिए और वह शज़्दावलंबनवाला शुद्धात्मा अनुभव भी कराता है। यानी पूछने जैसा कुछ नहीं है। केवल आत्मा ही जानने योग्य है। जो 'लक्ष्य' में आया वह आत्मा जानने योग्य है। यह मार्ग सरल है, सहज है, सुगम है। खुद को लक्ष्य में रखकर सब पूछना, पुद्गल का ध्यान रखने की ज़रूरत नहीं है। आत्मा आपके पास रहा, उसका ध्यान रखना है। आत्मा का स्पष्ट अनुभव करना हो तो विषय छः-बारह महीना बंद करना। ये सारे अनुभव तो होते रहते हैं मगर दोनों साथ रहने से मालूम नहीं पड़ता कि 'सुगंधी' (सुख) कहाँ से आती है? हमारी आज्ञा का अमल करने के बाद प्रतिक्रमण करने की शुरूआत कीजिए। बाद में ही वह विषय छूटेगा। हमारा यह ज्ञान, हम यह जो-जो बात करते हैं, उन सभी का अमल करने के बाद महीना-महीना भर दोषों के प्रतिक्रमण कीजिए। ताकि आपको खुद को विश्वास हो जाए कि यही सत्य है। आत्मा की अनंत शज़्ति है। कुछ लोगों को ब्रह्मचर्यव्रत लेने के बाद चमत्कार होता है। बाद में बहुत सुंदर परिणतियाँ रहती हैं और फिर मन में विषय के विचार ही बंद हो जाते हैं। फिर विषय उसे रुचता ही नहीं है। मनुष्य, सुख ही चाहता है। इसलिए, सुख मिलता हो तो फिर कोई कीचड़ में हाथ डालने को तैयार नहीं होता। यह तो बाहर ताप लगता है इसलिए कीचड़ में हाथ डालते हैं, ठंडक मिले इस हेतु से, वर्ना कीचड़ में कोई हाथ डालता होगा? मगर ज़्या हो सके?

प्रश्नकर्ता : मगर दादाजी, यदि आज्ञा पालन का उपयोग रहे तो ज्यादा आनंद रहे न?

दादाश्री : उसकी तो बात ही अलग है न! बाद में ब्रह्मचर्य पालना।

ज्ञानी की चेतावनी से कब चेतेंगे?

अब्रह्मचर्य वह अनिश्चय है, और अनिश्चय वह उदयाधीन नहीं है। यह सब तो बगैर भान के हैं, इसलिए जानवर की तरह जी रहे हैं। ऐसा, स्त्रियों को समझना चाहिए और पुरुषों को भी समझना चाहिए। मोक्ष में जाना हो तो सुख तो मोक्ष में है। और जिस दिन विषय नहीं हो तब के सुख का अनुभव तो देखिये? एक सालभर के लिए बंद करके देखिये! अनुभव करने पर हो सके। परसों चार-पाँच लोग आए थे, मैंने उनसे पूछा तो मुझे तो उलटे सिहरन दोड़ गई कि ऐसे मनुष्य भी हैं अभी? मैं तो समझता था कि विषय में सयाने हो गए हैं। पर ये तो अधिक विषयी हुए। 'अब तो दादा सिर पर हैं न, इसलिए कौन पूछनेवाला है?' अरे मुए, ऐसा किया? अन्य सभी की (अन्य इन्द्रिय विषय की) मैंने छूट दे रखी है। अन्य चार विषय (जो जड़ संबंधित हैं), आँख, आदि के किया करें, मगर यह (मिश्रचेतन के साथ हैं) इसलिए इस विषय की छूट नहीं हैं। यहाँ सामने ज़्लेइमवाला है, एग्रीमेंटवाला है, जोख़िमी है। वह जहाँ जाएगी वहाँ ले जाएगी। मैं तो उन चार-पाँच लोगों से पूछकर दंग रह गया। मैंने कहा, ऐसा पोल तो नहीं चलनेवाला, अनिश्चय है यह तो। उसे तो निकालना ही पड़े। ब्रह्मचर्य तो पहले चाहिए। वैसे, निश्चय से आप ब्रह्मचारी ही हैं मगर व्यवहार से ऐसा नहीं होना चाहिए? व्यवहार से भी होना पड़े।

व्यवहार चारित्र माने किसी स्त्री को दुःख नहीं हो ऐसे बर्तना, किसी स्त्री के प्रति दृष्टि नहीं बिगाड़ना।

प्रश्नकर्ता : वह तो उसकी भूमिका अनुसार होता है न? मनोबल के ऊपर तो सब वस्तुओं का आधार नहीं रखते न? उसके लिए आध्यात्मिक स्टेज (स्तर) की भूमिका होनी चाहिए, तभी यह वस्तु संभव है न?

दादाश्री : वह संभव हो या नहीं हो मगर आज संभव हो गया है। कुछ स्त्री-पुरुष हमारे पास से हमेशा के लिए ब्रह्मचर्यव्रत लेते हैं। ये जो सामने बैठे हैं, वे भाई और उनकी पत्नी ने छोटी उम्र में

ब्रह्मचर्यव्रत लिया है। ज़्योंकि भीतर में अपार सुख बर्तता है। सुख इतना आता है कि विषय उनको याद ही नहीं आता है।

ब्रह्मचर्यव्रत लेकर ट्रायल लें

छः-बारह महीने यदि स्त्री विषय से दूर रहें न तभी सुध आएगी, यह तो सुध ही नहीं है। सारा दिन उसका कैफ़ बना रहे और कैफ़ में ही घूमते रहें। इसलिए हम महात्माओं से कहते हैं कि छः महीने या बारह महीने ऐसा कुछ कीजिए (विषय से दूर रहिये), ज़्या हर्ज है आपको? कुछ महात्माओं ने ऐसा मन में तय किया और व्रत ट्रायल में लिया भी, ऐसा सभी लें तो बात ही बन जाए न! आज यह मोक्ष का साधन मिला है, अन्य सबकुछ खाने-पीने की सब छूट दे रखी है। एक यही (स्त्री विषय या पुरुष विषय) ही नहीं। उसका जो वर्णन भगवान ने किया है, वह वर्णन यदि मनुष्य के सामने किया जाए तो सारा वर्णन सुनने पर मनुष्य मर जाए।

इससे तो जानवर अच्छे। उनको कोई नियम होता है। यह (मनुष्य) तो जानवर से भी गए-गुज़रे हैं न? ज़्योंकि अभी भी नशे में ही रहा करते हैं। परसों जब चार-पाँच महात्माओं से बात हुई तो मैं तो बात सुनने पर दंग रह गया कि, 'अभी ऐसे मनुष्य भी हैं?' ज़्या यह हमें शोभा देता है? अन्य सभी विषयों की (अन्य इन्द्रिय विषयों की) छूट है। किंतु यह विषय बंधनकारी है। सामने फाइल है, ज़्लेइम है यह तो। तीस साल (युवानी) तक इसका फॉर्स हो तो ठीक है। और फॉर्स होने पर भी, जिसका दृढ़ निश्चय है, उसे ज़्या होनेवाला है? सब खाने-पीने की छूट दे रखी है। फिर भी यदि खाने में भी परहेज नहीं करेंगे तो वह नुकसान करेगा फिर, ज़्योंकि उसका फॉर्स वहाँ (विषय में) जाएगा न?

मोक्ष में जाना हो तो विषय को निकालना पड़ेगा। बहुत से महात्मा हैं जो सालभर का व्रत लेते हैं। 'सालभर का व्रत दीजिए मुझे', कहते हैं। सालभर में उसे पता चल जाता है।

दुरुपयोग से चेतिये

प्रश्नकर्ता : हम विषय में फिसल पड़े उसमें जोख़िम तो है ही पर उसमें हमारी सज़ा कितनी? हमें नहीं करना हो तो उसमें हमारी सज़ा कितनी?

दादाश्री : सारी सज़ा है। 'ऐज़्सिडन्ट' (आकस्मिक) तो कभी किसी दिन होता है, रोज़ नहीं होता। यानी, रोज़ करते हैं वह खुद के 'विल पावर' से (इच्छा से) होता है। बाकी, 'ऐज़्सिडन्ट' तो छः-बारह महीने में एकाध दिन होता है और वह 'व्यवस्थित' कहलाए, रोज़ाना 'ऐज़्सिडन्ट' होता है उसे 'व्यवस्थित' कहते हैं वह 'व्यवस्थित' का दुरुपयोग हुआ कहलाए।

प्रश्नकर्ता : मतलब, इसमें तो खुद की ही कमज़ोरी है न?

दादाश्री : बहुत बड़ी कमज़ोरी है। यह तो मनुष्य को मार डाले। तेरी नीयत बिगड़ी तब से भगवान की कृपा कम होने लगी, इसका मुझे पता चल जाए न! नीयत चोर है यानी फिर खतम हो गया न!

प्रश्नकर्ता : तो अब उसका उपाय ज़्या? भगवान की कृपा यदि कम होने लगे फिर तो सब समाप्त हो गया न?

दादाश्री : इसलिए यह नीयत चोरी छोड़ देनी चाहिए। उस ओर दृष्टि ही ज़्यों जानी चाहिए? मतलब सब मीनिंगलेस (वाहियात) बातें हैं। यह तो ऐसी दृष्टि बनानी पड़े कि कपड़ों के साथ भी आरपार दिखाई दे, यानी कपड़े पहने हो फिर भी कपड़े रहित दिखाई दे, फिर चमड़ी रहित दिखाई दे, ऐसी दृष्टि बना लेनी चाहिए, तब खुद की सेफसाइड होगी न? ऐसा ज़्यों कहता हूँ? मनुष्य को मोह ज़्यों होता है? कपड़े पहने हुए देखने पर मोह होता है। लेकिन हमारे जैसी आरपार दृष्टि हो जाए, फिर मोह ही उत्पन्न नहीं होता न?

प्रश्नकर्ता : बीच में थोड़े समय के लिए ऐसा रहता था, फिर ऐसा नहीं रहा।

दादाश्री : मतलब नीयत चोर है, नीयत में ही खोट थी। और विषय ऐसी वस्तु है कि वहाँ पर एज़्सेप्शनल (अपवाद) ही नहीं होता है। यह तो आपमें पाँच आज्ञा पालन करने की शज़्ति ही नहीं है। पाँच आज्ञा पालनी हो तो भी मैं किसी को एज़्सेप्शन नहीं दूँ। ज़्योंकि यह विषय तो आपको 'स्लिप' कराकर (फिसलाकर) कहीं का कहीं ले जाए और खलास कर डाले। इसलिए यदि यह एक विषय ही पार कर गया तो सेफसाइड हो जाए। हमारी आज्ञा में रहें तो आपको सहज कृपा मिले। 'दादा' को कुछ लेना भी नहीं है और कुछ देना भी नहीं है। आप आज्ञा में रहें तो हम जानें कि इन लोगों ने आज्ञा में रहकर (ज्ञान) रोशन किया।

कोई मनुष्य पाँच-सात दिन का भूखा हो, तो ज़्या वह लड़ने जाएगा? नहीं। ज़्यों? उसका मन पिघल गया होता है। ऐसा इस विषय का है, मन पिघल गया मतलब ठंडागार!

दृढ़ निश्चय से परमसुख की प्राप्ति

यह मैंने आपको जो दिया है वह इतना सुखदायी है कि उसके आगे दूसरा सुख आपको फीका लगे। मतलब रुचे ही नहीं, यह इतना सुखदायी है। परम सुखदायी है, परमसुख का धाम है! इसलिए अन्य सबकुछ फीका लगे, पसंद ही नहीं आए, उलटे घिन होती है।

किंतु यह तो ऐसी वकालत करके कि 'यह सब 'व्यवस्थित' है न!', ऐसा करके अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। लेकिन जोख़िम कितना बड़ा है! बिना हक़ का विषय मतलब कितना बड़ा जोख़िम कहलाए! आप जिस स्त्री से ज़्याह करें वही आपके हक़ का विषय। दूसरा हक़ का विषय आपको लागू नहीं होता, ऐसा सोचना तक मना है, दृष्टि तक नहीं कर सकते, तब हमारा साइन्स खुलता है। हमारा साइन्स इसके आधार पर है। इसके बेझमेंट (आधार) पर सब रहा है।

व्रत लेने से पहले उसकी गंभीरता समझिये

ब्रह्मचर्यव्रत सबको लेने की ज़रूरत नहीं होती है। वह तो जिनके उदय में आए, भीतर ब्रह्मचर्य के ही बहुत विचार आते रहते हों, वह फिर व्रत लेता है। जिसे ब्रह्मचर्य बर्ते, उसके दर्शन की तो बात ही अलग है न? किसी को उदय आता है, उसके लिए ही ब्रह्मचर्यव्रत है। उदय में नहीं आया हो तो उलटे मुसीबत खड़ी हो जाए, बखेड़ा हो जाए। ब्रह्मचर्यव्रत सालभर के लिए ले सकते हैं या छः महीने के लिए भी लिया जा सकता है। यदि आपको ब्रह्मचर्य के ही बहुत विचार आते रहते हों, उन विचारों को आप दबाने का प्रयत्न करें फिर भी विचार आते रहें तो ब्रह्मचर्यव्रत माँगना, वर्ना यह ब्रह्मचर्यव्रत माँगने जैसा नहीं है। यहाँ ब्रह्मचर्यव्रत लेकर बाद में उस व्रत का भंग करना वह महान गुनाह है। आपको कहीं कोई बाध्य नहीं करता कि आप व्रत ले ही लें। अंदर यदि व्रत लेने के लिए इच्छाएँ बहुत उछलकूद करती हों, तो ही व्रत लेना। कभी किसी दिन व्रत भंग होने पर ज्ञानी उसकी दवाई भी बतलाएँ। विषय का कभी भी विचार नहीं आना, वह ब्रह्मचर्य महाव्रत। यदि विषय याद आया तो व्रत टूटा।

हम जब आपको ब्रह्मचर्य (व्रत) की आज्ञा दें, और फिर उसमें यदि आपसे कोई भूल-चूक हो गई तो उसकी जोख़िमदारी बहुत बड़ी है। और यदि आप उसमें भूल नहीं करते तब फिर सारी जिज़्मेदारी हम पर! हमारी आज्ञापूर्वक आप जो भी करें उसमें फिर आपकी जोख़िमदारी नहीं रहती और हमारी जोख़िमदारी भी नहीं रहती! आप आज्ञापूर्वक करें इसलिए आपका अहंकार नहीं होता उसमें, इसलिए आपकी जोख़िमदारी नहीं रहती। तब फिर, जिसने आज्ञा दी उसकी जोख़िमदारी कहलाए न? किंतु हम स्याद्वाद् होते हैं, इसलिए जोख़िमदारी कैसे आए? व्रत वह कोई बाज़ारू चीज़ नहीं हैं! बिना व्रत के, मनुष्य को आसानी से ब्रह्मचर्य पालन नहीं हो सके, मन कच्चा पड़ जाए। यह ज्ञान (आत्मज्ञान) मिलने के बाद 'खुद

के' हाथ में सज़ा आ गई, परसज़ा में होने के बावजूद 'खुद' स्वसज़ा में है (पुद्गल में रहने के बावजूद, 'खुद' आत्म पक्ष में है)। दादा का वचनबल, बेकाबू मन को नियमबद्ध कर सके । ज्ञानी पुरुष का वचनबल संसार की रमणता को तोड़ डाले।

ब्रह्मचर्य से मानव में दैवीदशा

जिसे ब्रह्मचर्य के विचार आते हों वह प्रभावशाली कहलाए! देव ही कहलाए! और अब्रह्मचर्य के विचार आए तो साधारण मानव ही कहलाए न? पशु से लेकर साधारण मानवी तक, सभी को अब्रह्मचर्य के विचार आते हैं। अब्रह्मचर्य के विचार वह खुली पाशवता है। जिसे समझदारी नहीं है वह अब्रह्मचर्य में जा गिरता है।

विषय मुज़्त होने पर चढ़े दसवाँ गुणस्थान

जिसमें स्त्री 'परिग्रह' गिना जाता है, वह नवाँ गुणस्थान पार करने पर उसे कोई जोखिमदारी नहीं रहती। नवाँ गुणस्थान पार किया मतलब काम हो गया!!! स्त्री का परिग्रह मन-वचन-काया से समाप्त होने पर, व्यवहार में दसवाँ गुणस्थान खड़ा होता है। जब तक स्त्री परिग्रह पार नहीं किया तब तक नवाँ भी पार नहीं किया कहलाए। स्त्री का विचार भी आए तो नवाँ पार नहीं कर सके। इसलिए व्यवहार तो आपको ऊँचा उठाना ही पड़ेगा न? निश्चय के साथ व्यवहार भी ऊपर उठाना है। स्त्री परिग्रह है तब तक व्यवहार आठवें गुणस्थान से आगे नहीं खिसकता। वहाँ फिर, ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करने के बाद नवाँ गुणस्थान पार करे।

स्त्री बाधक नहीं है, अज्ञान बाधक है। स्त्री तो केवल कितनी बाधक है? जिस अवतार में मोक्ष में जाना हो, उसमें आखिरी दस, पंद्रह या पच्चीस साल स्त्री की गैरहाज़िरी होनी चाहिए। तभी वह गुणस्थान चढ़े, वर्ना गुणस्थान नहीं चढ़े। नवाँ गुणस्थान कब चढ़े? कि (जो ब्रह्मचर्य पालन करता हो) जिसके यहाँ स्त्री (पत्नी) नहीं होती, अथवा स्त्री होने पर भी स्त्री के विचार नहीं आते, विचार, वर्तन नहीं होता। स्त्री वह आपज़ि नहीं है, स्त्री बाधक नहीं है। मगर स्त्री का विचार, वर्तन नहीं हो तो वह नवाँ गुणस्थान चढ़कर दसवें में आए। इस काल में 'व्यवहार' दसवें गुणस्थान से आगे नहीं जा सकता और 'निश्चय' बारहवें गुणस्थान तक जा सकता है।

'ज्ञानीपुरुष' को कितना सुंदर दिखाई देता होगा? सर्वत्र शुद्धात्मा ही दिखाई दे। हम (दादाश्री) जब नवें गुणस्थान में से दसवें गुणस्थान में आए, तब से अपार सुख का अनुभव किया है! उस सुख की एक बुंद भी यदि बाहर गिरे और मनुष्य उसे चखे तो सालभर के लिए परम सुखिया हो जाए!!! यह विषय को लेकर ही सब तरह के अंतराय हैं और यही महारोग है।

ज्ञानी बर्ते निरंतर निर्विकार दशा में

प्रश्नकर्ता : एक भव में कर्म खपाने हों तो उन्हें कैसे खपाएँ?

दादाश्री : ज्ञानीपुरुष तो सबकुछ करें, अक्रम विज्ञानी चाहें सो करें।

यह अक्रम ज्ञानी तो वर्ल्ड का अजूबा है! मुझसे जो मिला उसका कल्याण हो गया, मगर मिलना चाहिए।

मेरा तो 'ऑपन टु स्काय' जैसा है। एक बाल के बराबर की चीज़ भी गुप्त नहीं रखी है। यह ज्ञान होने के बाद, अब्रह्मचर्य का मन से भी कभी मैंने सेवन नहीं किया है।

विषय का मुझे विचार तक भी नहीं आता है। स्त्रियों को देखकर मुझे विषय उत्पन्न नहीं होता है। ज़्योंकि मुझे आत्मा ही दिखाई देता है। निर्विचार दशा, निरिच्छ दशा, किसी भी प्रकार की इच्छा ही जिनको नहीं है। आज अट्ठाईस साल से हमें (विषय के) विचार ही नहीं आया। निर्विकारी दशा, निर्विकल्प दशा, कोई विकल्प ही नहीं। यह तो जगत का कल्याण कर देंगे।

जय सच्चिदानंद

दादावाणी

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में आगामी सत्संग कार्यक्रम

त्रिमंदिर अडालज

३१ जनवरी (शनि) शाम ४-३० से ६-३० **सत्संग**
१ फरवरी (रवि) दोपहर ३-३० से ७ **ज्ञानविधि**

राजकोट

५-६-७ फरवरी - शाम ७-३० से १० - **सत्संग** और **८ फरवरी** (रवि) शाम ५ से ८-३० - **ज्ञानविधि**
स्थल : रेसकोर्स ग्राउन्ड, बहुमाली भवन के सामने, राजकोट. **संपर्क :** ९९२४३४३९१०

मोरबी (जि. राजकोट)

१०-११ फरवरी - शाम ७ से ९-३० - **सत्संग** और **१२ फरवरी** (गुरु) शाम ६ से ९-३० - **ज्ञानविधि**
स्थल : मार्केटींग यार्ड, न्यु हाउसींग बोर्ड के सामने, शनाला रोड, मोरबी. **संपर्क :** ९४२६९३२४३६

भूज

१४ और **१६ फरवरी** - शाम ५-३० से ८ **सत्संग** और **१५ फरवरी** (रवि) शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**
स्थल : ज्युबिली ग्राउन्ड, भूज. **संपर्क :** ९९२४३४३७६४

मुंबई

१८-१९-२० फरवरी - शाम ६-३० से ९ **सत्संग** और **२१ फरवरी** (शनि) शाम ५-३० से ९ - **ज्ञानविधि**
स्थल : योगी सभागृह, स्वामीनारायण मंदिर के पास, दादर (से.रे.). **संपर्क :** ९३२३५२८९०१-०३

पूज्य नीरूमाँ को देखिए टी.वी. चैनल्स पर

भारत + **'स्टार प्लस'** पर हररोज सुबह ६-३० से ७ - विज्ञान, शाश्वत सुख का (हिन्दी में)
+ **'दूरदर्शन'** (नेशनल) पर सुबह ७-३० से ८ (गुरू-शुक्र) 'नई दृष्टि, नई राह' (हिन्दी में)
+ गुजरात में **'दूरदर्शन'** पर हररोज दोपहर ३-३० से ४ (अन्य राज्यों में डीडी-गुजराती पर उसी समय)
+ **दूरदर्शन मराठी 'सह्याद्रि'** पर सुबह ७-३० से ८ (सोम, मंगल, गुरू) - मराठी भाषा में
+ **'आस्था इन्टरनेशनल' पर हररोज दोपहर १-३० से २ (नया)**

USA + 'TV Asia' पर हररोज सुबह ७ से ७-३० EST (गुजराती में)
USA-UK + **'Aastha International' पर हररोज सुबह ८ से ८-३० (नया)**
Africa + **'Aastha International' पर हररोज सुबह १०-३० से ११ (नया)**
+ **समग्र विश्व में (भारत के अलावा) सोनी टीवी पर (सोम से शुक्र) सुबह ७ से ७-३० (हिन्दी में)**

पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल्स पर

भारत + **'Zee Gujarati'** पर हररोज सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)
+ **'दूरदर्शन'** डीडी-गुजराती पर हररोज रात ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)
+ **'आस्था इन्टरनेशनल' पर हररोज रात ३ से ३-३० (नया)**

U.S.A. + **'SAHARA ONE'** सोम से शुक्र ९ से ९-३० AM EST (गुजराती में)
USA-UK + **'Aastha International' पर हररोज रात ९-३० से १० (नया)**
Africa + **'Aastha International' पर हररोज रात १२ से १२-३० (नया)**

जनवरी २००९
वर्ष - ४, अंक - ३

दादावाणी

RNI No. GUJHIN/17258/05
Reg. No. GAMC-1500
Valid up to 31-12-2011
Posted at AHD. P.S.O. Sorting Office Set-1
on 15th of each month.

विषय को लेकर ही सब कुछ खड़ा रहा है !

ब्रह्मचर्य के विषय में किसी ने अभी तक ऐसा ब्योरेवार कहा ही नहीं है। 'शील' के बारे स्पष्टता करने पर सभी ने पर्दा डाल दिया है। लोगों को इसमें (विषय-विकार में) ही स्वाद आता है। जिस विषय के कारण अनेक प्रकार के झगड़े, विग्रह और संघर्ष पैदा होते हैं, उसी विषय में ये जीव फँसते हैं। फँसाव छूटता नहीं और अनंत अवतार होते हैं। क्योंकि स्त्री-पुरुष आमने-सामने बैर की वसूली में ही लगे रहते हैं। जब तक हम किसी मामले में अंध है, तब तक उस मामले में हमारी दृष्टि खिलती ही नहीं है। उससे दूर रहने के बाद ही दृष्टि खिलती जाती है और समझ में आता है। जिसने ब्रह्मचर्य की ऐसी पुस्तक पढ़ी हो वही ब्रह्मचर्य का पालन कर सकता है वर्ना ब्रह्मचर्य पालन आसान है क्या?

-दादाश्री

Publisher & Editor Mr. Deepakbhai Desai on behalf of Mahavideh Foundation Printed at **Mahavideh Foundation Printing Press** :- Parshvanath Chembers, Income Tax, Ahmedabad-14 and published.

Printed by Mahavideh Foundation - (079) 27543964, 27540816